Govt. Kamla Nehru Mahila Mahavidyalaya Damoh (M.P.)-

SSR for NAAC III Cycle 2022

- **AISHE ID: C-19132**
- **Established in 1964**
- **First & only Women College in Damoh Region**
- **Affiliated to Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University, Chhatrapur**

Criterion 3

Research, Innovation and Extension

3.3 Research Publications and Awards

3.3.2 Numbers of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceeding per teacher during last five years.

GOPAL PRASAD CHAUDHARI

Digitally signed by GOPAL PRASAD CHAUDHARI
DN: c=IN, postalCode=470661, st=MADHYA PRADESH, street=DAMOH,SHAKTI NAGAR COLONY ,470661, l=DAMOH, o=Personal, serialNumber=0edc34c85ca0a3e50f3bd468779a974c8853bfae13d292f510d141b9a31801cc, pseudonym=29793a41afde4cd380b1a9ad1dedc48f, 2.5.4.20=ced6a32ff8f92e3b8641da0d0358bb6229b679cea1dbfedef73eea3ad08e7a82, email=PRINCIPALKNMM@GMAIL.COM, cn=GOPAL PRASAD CHAUDHARI
Date: 2023.07.05 13:24:18 +05'30'

Ph: 07812-222385

Email: hegkngcdam@mp.gov.in

Website: http://www.knmmdamoh.in/

Office of The Principal Govt. Kamla Nehru Mahila Mahavidyalay
Damoh M. P.
Telephone ☎ 07812 -222385 Email- hegkngcdam@mp.gov.in
"NAAC Accredited B+"

SSR/NAAC/186

Date- 13/06/2023

Declaration

This is to declare that the information, reports, true copies and numerical data etc. Furnished in this file as supporting documents is verified by IQAC and found correct.

Hence this certificate

Dr. P. L. Jain
13/6/23
Dr. P.L. Jain
Prof. Phy.

13/6/23
Dr. G. P. Choudhary
Govt. Kamla Nehru Girls College Damoh
Principal

Index

3.3 Research Publications and Awards

3.3.2 Numbers of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceeding per teacher during last five years.

Sr. No.	*Theme*	*Activity/program/documents*	*Page No.*
1.	Dr. Mudita P. Shrivastav	Ajadi ke Sangharsh me yogdaan dene wale Vibhina Kranti veero ka Yogdaan P.N. 201-207	1-3
2.	Dr Aradhana Shrivas	Corona Virus Evum Mansik Tanav P.N. 46 2021	4-7
3.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Corona Prabhavit ArthvyawasthaMme Jaan Fukta Atam Nirbhar Bharat Abhiyaan :Ek AarthikVishleshan P.N. 78.	8-13
4.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Kuposhan ki aag se khaakhota bachpan PN. 262-275.	14-20
5.	Nayantara	Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm 2021.	21-24
6.	Smt. PreetiVerma	Corona Virus evumMansikTanav P.N. 55 2021.	25-29
7.	Smt. Surekha Badole	Corona Virus evumMansikTanaav P.N. 63 2021.	30-34

8.	**Dr. Aprna Devi Goswami**	**Support-Led social security programmes for the unorganized sector.**	**35-37**
9.	**Dr. Aslam Khan Asst. Prof.**	**Pradooshankigiraft my fastahuasamposhaneeyvikaas PN.**	**38-41**
10	**Dr. Aslam Khan Asst. Prof.**	**BharteeyArthvivstha par corona virus kaprabhav PN. 129-139.**	**42-47**
11.	**Dr. Mudita P. Shrivastav**	**Vridhaawastha evum Shaskhiya Neetiya 2019.**	**48-50**
12.	**Dr. Aradhana Shrivas**	**“Apada Aur Jalvayu.**	**53-57**
13.	**Shri Ankit Kumar**	**MahirshidayanandkratbhashyeNiruktprabhav**	**58**
14.	**Dr. Aslam Khan Asst. Prof.**	**Rajasv Vradhhika Rambaan Upaay GST PN: 37-47.**	**59-63**
15.	**Smt. Jaya Ahirwar**	**Gareebi or aarthik vikas 2018.**	**64-66**
16.	**Dr. Mudita P. Shrivastav**	**Bhoomandlikaran ke Bhavar me Samkaleen Samaz P.N. 140-141.**	**67-70**
17.	**Dr. Aradhana Shrivas**	**Fast Foods Ka balko ke shareerk avm mansik vikaas pr prabhav ka aadhayn.**	**71-72**

SERIAL NO.-1: Book Chapter: Dr. Mudita P. Shrivastav: Ajadi ke Sangharsh Me Yogdaan Dene Wale Vibhina Krantiveero Ka Yogdaan .

LIST OF AUTHORS

1. Dr. Pappi Chouhan
   Asstt. Professor (History)
   Nachiketa College, JBP (M.P)
2. Ratna Singh
   Research Scholar
   Deppartment of Political Science (B.H.U. Varanasi U. P.)
3. Dr. Sanket Kumar Chouksey
   Asstt. Professor (History)
   Rajmata Sindhiya Govt Girls P. G. College, Chhindwara (M.P.)
4. डॉ. स्वाति शुक्ला
   सहायक प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय ताला सतना
5. Dr. Shabana Anjum
   Principal, Anjuman islamia College, JBP (M.P.)
6. Dr. Anuradha Chandel
   Asstt Professor, Anjuman Islamia College JBP (M.P)
7. Smt. Reeta Dubey,
   Asstt-Professor,
   Nachiketa College JBP. (M.P.)
8. डा. लता पवार
   सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
9. डॉ. मौसमी परिहार
   सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
10. डॉ. हरिमोहन बुधौलिया
    सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
11. Ayush Yadav
    Research Scholar
    Department of Political science (B.H.U. Varanasi, U.P.)
12. Dr. Hemant Kumar Malviya
    Professor
    Department of Political science (B.H.U. Varanasi, U.P.)
13. Mahesh Koshtha
    Asstt. Professor.
    Nachiketa College JBP. (M.P)
14. Smt.Neerja Garg,
    Asstt. Professor,
    Nachiketa College JBP. (M.P)
15. श्रीमती रेखा श्रीवास्तव
    शोधार्थी
16. Arun Kumar Gondane
    Research Scholor (History)
    Barkatullah University Bhopal (M.P)
17. डॉ. महेन्द्र गिरि
    सहायक प्राध्यापक
18. Dr. Vasundhara Sharma
    Asstt. Professor
    Nachiketa College, JBP (M.P.)
19. डॉ. अभिजीत सिंह
    सहायक प्राध्यापक
    महात्मा गांधी महाविद्यालय नरसिंहपुर
20. Miss Jyeshta Tiwari
    Asstt. Professor
    Nachiketa College JBP (M.P.)
21. श्रीमती रीना सोलंकी
    शोधार्थी
22. Dr. Ritu Tiwari,
    Asstt. Professor
    Nachikata College JBP (M.P.)
23. सरफराज खान कुरैशी
    सहायक प्राध्यापक महात्मा गांधी महाविद्यालय नरसिंहपुर
24. Abhishak Singh Bagri
    Student,
    Nachiketa College JBP (M.P.)
25. Dr. Rakesh Kushwaha,
    Asst. Professor,
    Nachiketa College, JBP (M.P)
26. Chunchun Kr. Bharti,
    Barkatullah University, Bhopal (M.P.)
27. Ratnesh Verma
    Asstt. Professor,
    Nachiketa College, JBP (M.P.)
28. Mrs. Snehlata Dubey.
    H.O.D. Department of Arts,
    Nachiketa College JBP (M.P.)
29. Shri Ravindra Singh Chandel,
    Ragistrar,
    Nachiketa College, JBP (M.P.)
30. Dr. Mudita Praveen Srivastava
    Associate Professor & H.OD department of Sociology.
    Govt. Kamla Nehru Women's College, Damoh (M.P.)
31. Dr. Umesh Deepankar
    Guest feculty (Sociology)
    Govt. Kamla Nehru women's College Damoh (M.P.)
32. Miss Nidhi Sajwan
    Research Scholar (History)
    Barkatullah University Bhopal (M.P)
33. Shri Ajay Shukla
    Asstt. Professor

P.N. 201-207.

Cont……

27

आजादी के संघर्ष में योगदान देने वाले विभिन्न क्रांतिवीरों का योगदान

डॉ. श्रीमती मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव (सह प्राध्यापक)
डॉ. उमेश दीपांकर (अतिथि विद्वान)

सारांश

भारत में स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजो के विरुद्ध आंदोलन दो प्रकार का था, एक आहिंसक एवं दूसरा सशस्त्र भारत के आजादी के लिए 1857 से 1947 के बीच जितने भी संघर्ष हुए स्वतंत्रता का सपना संजोये क्रांतिकारियों और शहीदों की उपस्थित सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती के जितनी भक्ति और याद मातृभूमि की सेवा और उसके लिये मर-मिटने की जो भावना उस समय थी, आज उसका नितान्त अभाव हो गया।

क्रान्तिकारी आंदोलन का समय सामान्यत: लोगों ने 1857 से 1942 तक माना है। श्रीकृष्ण सरल का मत है कि इसका समय सन् 1757 अर्थात् प्लासी के युद्ध से सन् 1961 में गोव मुक्ति के साथ ही भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वाधीन हो गया। प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष के असफल हो जाने पर भी विद्रोह के अग्नि ठंडी नहीं हुई। आजादी के संघर्ष में कुका विद्रोह, चरबीयुक्त कारतूस का विरोध, हड़पनीति का विरोध विलय नीति का विरोध नमक पर टैक्स जैसे—कार्यों के कारण संघर्ष हुआ। मंगल पाण्डेय, सुभाष चंद बोस, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, नाना साहब आदि क्रांतिकारियों ने संघर्ष में योगदान दिया।

Cont…..

फांसी की सजा सुना दी गई। फैसले के अनुसार उन्हें 18 अप्रैल 1857 को फांसी दी जानी थी, लेकिन अंग्रेजों द्वारा मंगल पांडे को दस दिन पूर्व ही 08 अप्रैल सन् 1857 को फांसी दे दी गई।

मंगल पांडे की शहादत की खबर फैलते ही अंग्रेजों के खिलाफ जगह-जगह संघर्ष भड़क उठा। हालांकि अंग्रेज इसे काबू करने में कामयाब रहे, लेकिन मंगल पांडे द्वारा लगाई गई यह चिंगारी की आजादी की लड़ाई का मूल बीज साबित हुई। यह विद्रोह ही भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, जिसमें सिर्फ मजदूर एवं अन्य सभी समान लोग शामिल हुए। इस विद्रोह के बाद भारत पर राज्य करने का अंग्रेजों का सपना कमजोर होता सावित हुआ।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई—जन्म काशी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ। इनका बचपन का नाम मनु था। विवाह (1850) गंगाधर राव से हुआ, 1851 में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई चार माह वाद पुत्र की मृत्यु हो गई। अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दस्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दस्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया। 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दस्तक पुत्र दामोदर राव को अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य से मिलाने की घोषणा कर दी। लक्ष्मीबाई ने कहा मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। 07 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ झांसी में रानी ने पेंशन स्वीकृत कर दी। अंग्रेजो की राज्य हड़पनीति से उत्तर भारत के नवाब ओर राजा असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भड़क उठी, रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई। हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगल जीतन महल, बहाद्र शाह, नाना साहब, राजा मर्दन सिंह ओर तात्या टोपे आदि ने महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे। रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी को सुरक्षा की ओर अपनी छोटी अंत में अंग्रेजों ने रानी का पीछा किया रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया, अंत में वीरगति प्राप्त हुआ।

जवाहर लाल नेहरू—जन्म 14 नवम्बर 1889 इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम मोती लाल नेहरू और माता स्वरूपरानी था। अपनी स्कूली शिक्षा हैरो और कॉलेज की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज लंदन से पूरी की थी। गांधी जी से प्रभावित होकर 1912 में कांग्रेस से जुड़े 1920 को प्रतापगढ़ के पहले किसान मोर्चे को संगठित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। 1928 में लखनऊ में साइमन् कमीशन के विरोध में नेहरू घायल हुये, 1930 नमक आंदोलन में गिरफ्तार हुए उन्होंने 06 माह जेल

SERIAL NO.-2 :Book Chapter: Dr Aradhana Shrivas: Corona Virus evumMansikTanav P.N. 46. 2021.

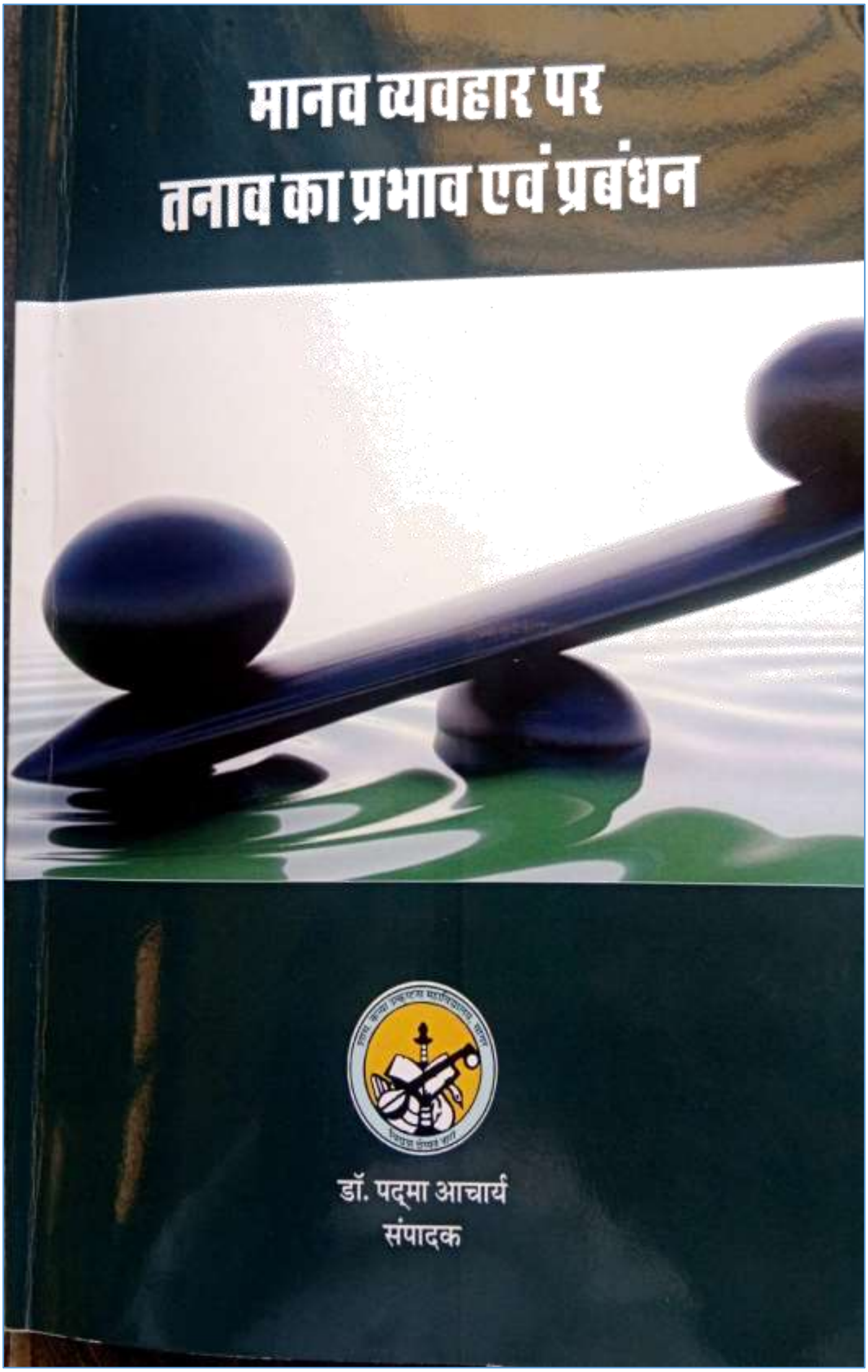

Cont…..

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

वेबीनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :

1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021
संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856
अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont…..

कोरोना वायरस एवं मानसिक तनाव

डॉ. आराधना श्रीवास
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान
षासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह म.प्र.

भागती दौड़ती जिंदगी में अचानक लगे इस ब्रेक और कोरोना वायरस के डर ने लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। कोरोना की लड़ाई अभी जारी है। जिसका सामना हमें करना पड़ रहा है। इस लड़ाई के बीच कई ऐसी चुनौतियाँ है जो शारीरिक एवं मानसिक रूप में हमारे सामने आ रहे है। इस दौरान कई लोगों को तनाव की शिकायतें हो रही है। कोरोना न्यूज ने जिन्दगी को जैसे थाम सा दिया है जो अब धीरे–धीरे पटरी पर आ रही है। लेकिन इस दौरान महामारी से पहले जिन्हें कभी मानसिक समस्याएँ नहीं हुई थी, उन्हें भी तनाव और चिंता होने लगी है और अगर इसके साथ सही से समायोजन नहीं किया गया, तो मानसिक स्वास्थ्य एक नये संकट का रूप ले सकता है।

कोरोना वायरस ने दुनिया के करोड़ों लोगों की दिनचर्या को बदलकर रख दिया है। कोविड–19 की वजह से लोगों को अधिकांश समय घर में ही कैद रहकर गुजारना पड़ रहा है। स्कूल, कॉलेज, बिजनेस का काम घरों से ही होने लगा है। बाहर कम निकलने से मानसिक तनाव बढ़ा है तथा कोरोना वायरस की खबरों ने भी मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाला है। इस वजह से लोगों को तनाव चिंता और घबराहट की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोगों में तनाव बढ़ने की तीन वजह है। एक तो कोरोना वायरस से संक्रमित होने का डर, दूसरा नौकरी और कारोबार को लेकर अनिश्चितता और तीसरा लॉकडाउन के समय आने वाला अकेलापन।

कोविड–19 महामारी के प्रभाव से दुनिया भर की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर हो रहा है जिसके कारण कई लोगों के रोजगार छिनने का खतरा मंडरा रहा है। इसका सीधा असर पारिवारिक तनाव और मानसिक परेशानी के रूप में सामने आ रहा है। इस कोरोना वायरस के चलते लोग काफी निराश हो गये हैं लेकिन इस कठिन दौर में बहुत से ऐसे उपाय है जिन्हें अपना कर लोग इस समस्या से निपट सकतें है।

डॉ. रतनपाल सिंह बनहारा 2020 इन्होंने बतलाया है कि कोरोना वायरस को लेकर सजग रहना बहुत आवश्यक है। लोग जब घर से बाहर जाते है तो उन सभी को संक्रमण का डर रहता है यदि उनको चिंता है तो वह उचित रूप से मास्क लगायें, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें, उचित दूरी बनाये। यदि व्यक्ति की चिंता इतनी है कि सांस लेने में भी तकलीफ होने लगे तो कहीं ना कहीं यह चिंता जरूरत से ज्यादा है तो व्यक्ति को एंजाइटी के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

डॉ. हेमंत पाणीग्रही के अनुसार संपूर्ण स्वास्थ्य के लिये मानसिक स्वास्थ्य भी आवश्यक है जिसके लिये आपको योगा प्राणायाम करना चाहिये।

डॉ. अशोक कुमार शर्मा 2020 इन्होंने बताया है कि कोविड–19 ने ग्लोबल कैपिसिटी को चैलेंज कर दिया है। यह पूरे विश्व के लिये चैलेंज हो गया है। कोविड को

Cont…..

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन'

अनुक्रम

1	तनाव प्रबंधन एवं ध्यान	डॉ. दुर्गेश शांडिल्य	1
2	कोविड–19 के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन	डॉ. पद्मा आचार्य	5
3	शहरी एवं ग्रामीण किशोरो में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन (खंडवा जिले के विशेष संदर्भ में)	डॉ. जयश्री बाथम	9
4	तनाव प्रबंधन में साहित्य की उपादेयता	डॉ ओ.पी. शर्मा डॉ एस.एन. शर्मा	12
5	आधुनिक जीवन शैली में तनाव और उसका प्रबंधन	डॉ. ए. के. जैन	17
6	युवा तनाव – एक सामाजिक समस्या का अध्ययन	डॉ संजय खरे	22
7	विद्यार्थियों में उत्पन्न तनाव : कारण एवं समाधान	हंसा मीना डॉ0 हेमा कुमारी महर	27
8	कोविड–19 : तनाव, कारण एवं समाधान	डॉ. भावना यादव	31
9	युवाओं में बढ़ता तनाव एक प्रबल समस्या	श्रीमती कृष्णा शर्मा	34
10	शारीरिक – मानसिक स्वास्थ्य पर तनाव का प्रभाव	पूजा सोनकर डॉ नंदा गुरवारा	36
11	आत्महत्या का उत्प्रेरक कारकः तनाव	डॉ एस. डी. राठौर डॉ ए. आर. खान डॉ ओ. पी. शर्मा	40
12	मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन	डॉ. नीलम सिंह	42
13	कोरोना वायरस एवं मानसिक तनाव	डॉ. आराधना श्रीवास	46
14	कार्यशील महिलायें – परिवार एवं समय प्रबंधन	डॉ. निधि ठाकुर	49

SERIAL NO.—3 : Book Chapter: Dr. Aslam Khan: Corona Prabhavit arthvyawastha me Jaan Fookta Atma Nirbhar Bharat Abhiyaan : Ek Aarthik Vishleshan P.N. 78.

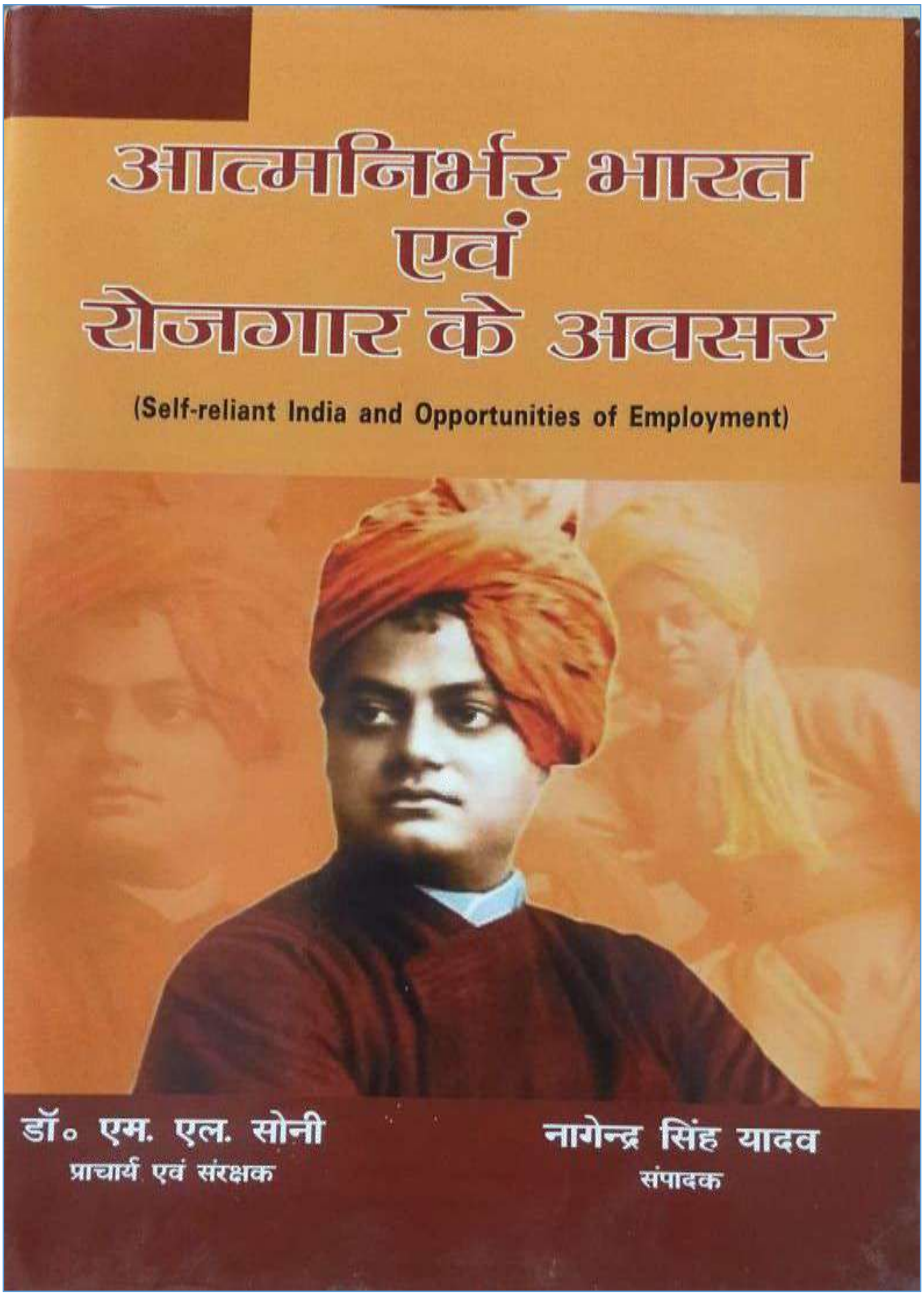

Cont….

आत्मनिर्भर भारत एवं रोजगार के अवसर

(Self-reliant India and Opportunities of Employment)

डॉ० एम. एल. सोनी
प्राचार्य एवं संरक्षक

श्री नागेन्द्र सिंह यादव
संपादक

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीना
जिला सागर (म.प्र.)

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
दिल्ली-110053

Cont……

12. आत्मनिर्भर भारत : देश में रोजगार की असीम सम्भावनाए 118
डॉ. कृष्णा राय चैहान
13. कोरोना वायरस का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव 126
धर्मेन्द्र सिंह
14. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाऐं 134
डॉ0 कवलजीत कौर, डॉ0 कल्पना जोशी
15. भारत में महिला श्रम की भागीदारी 141
डॉ. ममताधाकड़
16. रोजगारमूलक शिक्षा 148
डॉ. शैलेष कुमार पाण्डेय
17. वर्तमान परिदृश्य में रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता 155
विनय कुमार
18. पर्यावरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से कलुषित होता जनमानस 161
आशीष राठौर
19. गृह विज्ञान मे रोजगार के अवसर 171
डॉ प्रियंका गेहलोत
20. रोजगार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएँ: मध्यप्रदेश के संदर्भ में 177
डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा, कु. आकृति खरे
21. आत्मनिर्भर भारत में कौशल विकास की भूमिका 182
रीना राठौर
22. Vermicomposting: The Use of Earthworms to Convert Organic Waste into Natural Fertilizer at Low Cost 191
Dr. Ritu Sharma
23. Aatmanirbhar Bharat and Women's Economic Empowerment 204
Dr. Reema Sharma
24. The history of women's work and wages and how it has created success for us all 216

Cont…..

12. आत्मनिर्भर भारत : देश में रोजगार की असीम सम्भावनाए 118
डॉ. कृष्णा राय चैहान
13. कोरोना वायरस का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव 126
धर्मेन्द्र सिंह
14. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाऐं 134
डॉ0 कवलजीत कौर, डॉ0 कल्पना जोशी
15. भारत में महिला श्रम की भागीदारी 141
डॉ. ममताधाकड़
16. रोजगारमूलक शिक्षा 148
डॉ. शैलेष कुमार पाण्डेय
17. वर्तमान परिदृश्य में रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता 155
विनय कुमार
18. पर्यावरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से कलुषित होता जनमानस 161
आशीष राठौर
19. गृह विज्ञान मे रोजगार के अवसर 171
डॉ प्रियंका गेहलोत
20. रोजगार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएँ: मध्यप्रदेश के संदर्भ में 177
डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा, कु. आकृति खरे
21. आत्मनिर्भर भारत में कौशल विकास की भूमिका 182
रीना राठौर
22. Vermicomposting: The Use of Earthworms to Convert Organic Waste into Natural Fertilizer at Low Cost 191
Dr. Ritu Sharma
23. Aatmanirbhar Bharat and Women's Economic Empowerment 204
Dr. Reema Sharma
24. The history of women's work and wages and how it has created success for us all 216

Cont…..

Payal Sharma 224
25. Self Dependency in Higher Education
Sunil ojha 230
26. Scope of E-Commerce in Agribusiness in India
Dr.Gajendra Pathak 236
27. Changing Dimensions of Employment during COVID-19 Pandemic
Dr. Kritika, Sunita Devi
28. Digital Tools & Specific Employment Demand Escalation In Pandemic With Reference To India 242
Ms. P.S.Chandel
29. During The Year of Undergraduate Students of Arts Stream : At The Time of Admission, During The Study And At The End of The Year The Study of Vocational Aspirations 247
Dr. Jayantilal Rathod
30. The Role of Medicinal Plant Cultivation in Creating Employment Opportunities in India 255
Shiv Mangal

Cont……

कोरोना प्रभावित अर्थव्यवस्था में जान फूँकता आत्मनिर्भर भारत अभियान: एक आर्थिक विश्लेषण

डॉ. असलम खान
सहा.प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

परिचय

जैसाकि हम सभी जानते है कि सारा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा है। इससे हमारा देश भी अछूता नहीं रहा है। इस महामारी ने सारे विश्व को सोचने पर मजबूर कर दिया है। चूँकि हमारी अर्थव्यवस्था एक विकाससील अर्थव्यवस्था है। यहाँ की आबादी जनगणना 2011 के अनुसार 1210569573 है। 1 वर्तमान में लगभग 130 करोड़ है जो विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। इतनी आबादी की प्रति व्यक्ति आय (2017-18 में बाजार मूल्य के आधार पर) 114958 रू ने इसके संघर्ष की कहानी लिख दी है।2 प्राचीनकाल से हमारी अर्थव्यवस्था अनेक समस्याओं से लड़ती आ रही है। वर्तमान कोरोना महामारी ने हमारी अर्थव्यवस्था को लगभग एक दशक के लिए पीछे कर दिया है। भारत में इस महामारी से लडने एवं इस पर जीतने के लिए सभी ने क्षमतानुसार प्रयास किया है एवं कर रहे हैं। यही कारण है कि अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में कोरोना से प्रभावित होने वालों का प्रतिशत्, जनसंख्या के अनुपात में कम है। इससे लड़ने और जीतने के लिए सभी राज्यों की सरकारों ने अपने-अपने स्तर से कार्य योजनाये बनाईं हैं और उन पर अमल भी किया और कर रहे हैं। केन्द्र सरकार ने भी देश हित में एक एंसे अभियान की शुरूआत की जो कोरोना संकट में रामबाण सिद्ध हो रहा है। यह योजना या अभियान आत्मनिर्भर भारत अभियान है। आत्मनिर्भर भारत अभियान को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी जी ने 12 मई 2020 को राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रारंभ किया है। इस अभियान का श्रीगणेश करते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोविड -19 महामारी से पहले तथा बाद की दुनिया के बारे में बात करते हुए कहा कि

SERIAL NO.- 4 :Book Chapter: Dr. Aslam Khan: Kuposhan ki aag se khaakhota bachpan PN. 262-275.

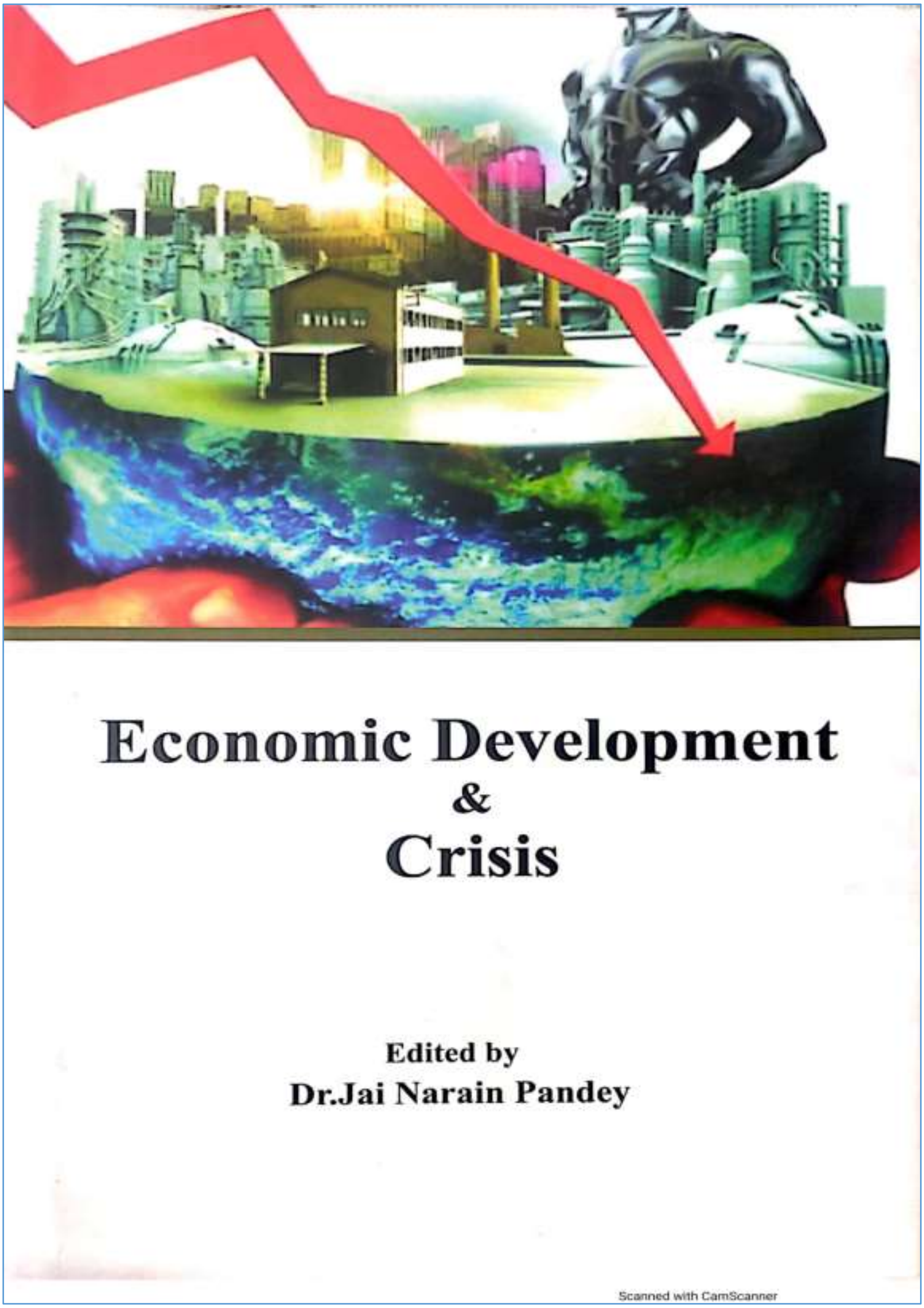

Cont……..

एकैडमिक
ACADEMIC PUBLICATION
B-578, Street No. 8, Near Shanti Palace,
1st Pusta, Sonia Vihar,
Delhi-110094
P.No. : 09811966475, 9971384665
Email : academicpublicationsdelhi@gmail.com
academic2014@gmail.com

© Editor

New edition : 2021
ISBN 978-93-83931-70-5

Rs. : 1,500/-

Lay-Outing
Harsh Computers
(Mo. : 7011503212)

Economic Development & Crisis : Edited by Prof. Jai Narain Pandey
2021, Price : 1,500/-

Cont……

Contents
अनुक्रमणिका

S. No.	Topic	Author	Page No.
i.	Message	*Prof. Mohd. Muzammil*	*iii*
ii.	Message	*Dr. S. K. Tripathi*	*vii*
iii.	From Editor's Dask	*Dr. Jai Narain Pandey*	*ix*
1.	Economic Development Model	*Dr. Jai Narain Pandey*	1
2.	Covid 2019	*Lt. Col. Dr. Walmik Yegade*	17
3.	The Crude Oil Price Sensitivity and Economic activities- A Case study of Nigeria (Ethiopia)	*Dr. Bhupendra Kumar*	29
4.	Health and Development with Reference to India	*Dr. R.Y. Mahore*	43
5.	Economic Development With Data & Technology (Singapore)	*Shashank Tripathi*	57
	Higher Education in the Face of Covid-19 in the Ugandan Context: Implications for Sustainable Development Goals in the Developing Nation (Uganda)	*Dr. David Ssekamatte*	64
	Role of Agriculture in Economic Development of India	*Dr. Janrdan Bhagat* *Dr. Ramesh Kumar Jaiswal*	72

Scanned with CamScanner

Cont……

8.	Covid-19 Crisis and its impact on Employment in India	*Dr. Vinod Sen*
9.	Efficacy of Practicing Spiritual Psychological Interventions, and Mindfulness Meditation in COVID-19 Pandemic	*Dr. Preeti Pandey*
10.	SOCIO- Economic Impact of 2019-20 Corona Virus Pandemic in India (Special Reference to Chhattisgarh)	*Dr. V.K. Sharma* *Shraddha Das*
11.	Impact Assessment of Cluster Front Line Demonstration on Mustard Crop in District Patan (Gujarat)	*Upesh Kumar*
12.	Development of Scheduled Tribe Population in Madhya Pradesh: A Comparative Analysis	*Dharam Das Vishwakarma*
13.	Covid-19 Problems and Opportunities for India	*Dr. P. U. Athawale*
14.	Relationship Between Trade Openness, Financial Development and Economic Growth of Nepal: A Production Function Approach	*Shreejal Gharti Chettri (Nepal)*
15.	An Overview of Challenges, Theory and Policy Related To International Economic Growth and Crisis	*Dilip Vithal Badave*
16.	Impact of Corona Virus on Educarion	*Dr. Rama J Shah*
17.	Development and Environment	*Dr. Madhuri Gupta*
18.	Post Covid-19 Higher Education: Opportunities and Challenges	*Dr. Samit Laxman Mahore*
19.	Covid-19 and Its Impact on Education Odisha	*Samir Kumar Das*

Scanned with CamScanner

Cont…….

20.	Reverse Migration: Impact on Rural Economy	*Dr. Devashish Haldar*	187
21.	Global Economic Crisis and Key Strategies	*Dr. Namrata Shrivastava*	193
22.	Smart Public Services	*Umesh Kumar Pandey* *Dr. Snehlata Barde*	204
23.	Impact of Covid-19 on Unorganized Sector: A Big Socio- Economic Challenge in Bihar	*Dr. Nagma Shadab*	211
24.	Regional Imbalances in India	*Dr. Anita Dikshit*	213
25.	कोरोना-काल में आर्थिक-सामाजिक भूचाल	*डॉ. चन्द्र कुमार जैन*	223
26.	भूमंडलीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	*डॉ. रश्मिप्रभा फरे* *प्रो. विकास वर्मा*	228
27.	कोविड-19: पर्यावरण के लिये संजीवनी	*डॉ. अंजू सिंह*	235
28.	बक्सर अनुमंडल में स्वास्थ्य कार्यक्रमों का जनसंख्या नियंत्रण का "कृषि और विकास" पर प्रभाव	*रवि शंकर राम*	239
29.	बिहार में कोविड-19 और उसका शिक्षा पर प्रभावः "एक भौगोलिक अध्ययन।"	*डॉ. नागेंद्र दास*	241
30.	कोविड-19 का शिक्षा पर प्रभाव	*प्रा. डॉ. जे. एस. हटवार*	247
31.	वैश्वीकरण एवं औद्योगिक विकास का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	*विनोद नागले*	253
32.	कुपोषण की आग से खाक होता बचपन	*डॉ. असलम खाँ*	261
33.	वैश्वीकरण और उच्च शिक्षा चुनौतियाँ व सम्भावनाएँ	*डॉ. कृष्णा सोलंकी*	276
34.	महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना का ग्रामीण विकास में योगदान	*देवशरण सिंह*	280
35.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना कोविड-19 का प्रभाव	*डॉ. स्निग्धा भट्ट* *डॉ. बलराम साहु*	284
36.	"कोविड-19 एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के रोजगार पर प्रभाव"	*गुलशेर अहमद* *डॉ. आर.बी.एस. चौहान* *श्रीमति रचना मिश्रा*	289

Cont……

37. विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 महामारी में निहित विविध आयाम — डॉ. नियाज अहमद अंसारी, डॉ. गुजाम मोहइयुद्दीन
38. कृषि और विकास — डॉ. क्रेसेन्सिया टोप्पो, सुशील कुमार टोप्पो
39. कोविड-19 और उसका रोजगार पर प्रभाव — मिनि अरोरा
40. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण — डॉ. (श्रीमती) रेणुका शर्मा
41. कोरोना महामारी के दौरान उत्पन्न मंदी का कृषि क्षेत्र पर प्रभाव: एक स्वतंत्र आलेख — डॉ. कल्पना गुहा
42. कोरोना वायरस का रोजगार पर प्रभाव (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) — डॉ. जी.डी.एस. बग्गा
43. कृषि एवं आर्थिक विकास — डॉ. प्रवीण कुमार
44. कोविड-19 और उसका शिक्षा एवं रोजगार पर प्रभाव — डॉ. रंजना नीलिमा कच्छप
45. कोरोना वायरस का प्रकोप — डॉ. पूर्णिमा साहू
46. प्रवासीय मजदूरो पर कोविड का सामाजिक आर्थिक प्रभाव — डॉ. अनीता मेश्राम
47. कोविड-19 का शिक्षा पर प्रभाव — डॉ. श्रीमती सविता जैन
48. भारत के विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान — डॉ. सुरेंद्र गोविंदराव पोथारे
49. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंदी — प्रो. रीता सिंह
50. प्राकृतिक संसाधनो की सुरक्षा एवं संरक्षण — डॉ. श्रीमती नीलम शुक्ला

A Annexed 01 Brochure of National Webinar
B Annexed 02 Brochure of International Webinar

Cont…….

कुपोषण की आग से ख़ाक होता बचपन

डॉ. असलम खाँ

परिचय :

यह एक ऐसा चक्र है जिसकी चुंगल में बच्चे अपनी माँ के गर्भ में ही फँस जाते हैं। उनके जीवन की नियति दुनिया में जन्म लेने के पहले ही तय हो जाती है। यही नियति लिखी जाती है गरीबी और भुखमरी की स्याही से, इसका रंग स्याह, उदास होता है और स्थिति गंभीर होने पर जीवन में आशा की किरणें भी नहीं पनप पाती हैं। कुपोषण के मायने होते हैं आयु और शरीर के अनुरूप पर्याप्त शारीरिक विकास ना होना, एक स्तर के बाद यह मानसिक विकास की प्रक्रिया को भी अवरुद्ध करने लगता है। बहुत छोटे बच्चों खासतौर पर जन्म से लेकर 5 वर्ष की आयु तक कि बच्चों को भोजन के जरिए पर्याप्त पोषण आहार ना मिलने के कारण उनमें कुपोषण की समस्या जन्म ले लेती है। इसके परिणाम स्वरूप बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास होता है और छोटी-छोटी बीमारियाँ उनकी मृत्यु का कारण बन जाती हैं।

कुपोषण के हम निम्न रूप देख सकते हैं :

कुपोषण मुख्यतः 6 रूपों में नजर आता है जो क्रमशः है :

1 जन्म के समय कम वजन होना। 2 बचपन में वाधित विकास होना। 3 अल्प रक्तता होना।

4 विटामिन ए की कमी पाया जाना। 5 आयोडीन कमी संबंधित बीमारियाँ होना। 8 मोटापा होना

बच्चों में कुपोषण मुख्यतः दो प्रकार का होता है :

1 सूखे वाला कुपोषण 2 सूजन वाला कुपोषण

कुपोषण की पहचान हम बच्चों में निम्न लक्षण देख के कर सकते हैं :

1 शरीर की वृद्धि रूकना। 2 बच्चे की मांसपेशियाँ ढीली एवं सिकुड़ जाना। 3 बच्चे को झुर्रियाँ आना एवं पीले रंग की त्वचा होना।

4 बच्चों को हल्का चलने व काम करने में थकान महसूस होना। 5 बच्चों का मन प्रसन्न ना होना उनके मन में उत्साह की कमी होना।

SERIAL NO.—5 : Book Chapter: Nayantara: Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm 2021.

Cert. No. : 22 / 2021 / 04

Date : 18.02.2021

Krishna Publication House

(Registered by MSME Govt. of India)

CERTIFICATE OF PUBLICATION

Dear Author(s) ......NAYANTARA...... it is indeed our pleasure to inform that your article title "Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm" has been published in the book of "ECONOMIC IMPORTANCE OF DIFFERENT CLASSES OF PLANTS" & ISBN 978-93-90627-08-0 The research paper is original and innovative. it is double blind peer reviewed. The chapter is published in the month of MAY Year 2021 This book is National Scientific Indexing by Krishna Publication House, Antawadi, Bhavnagar, Gujarat - 364 002. India

Dr. Kavita Chahal
Editor

Managing Editor
(Krishna Publication House)

Cont…….

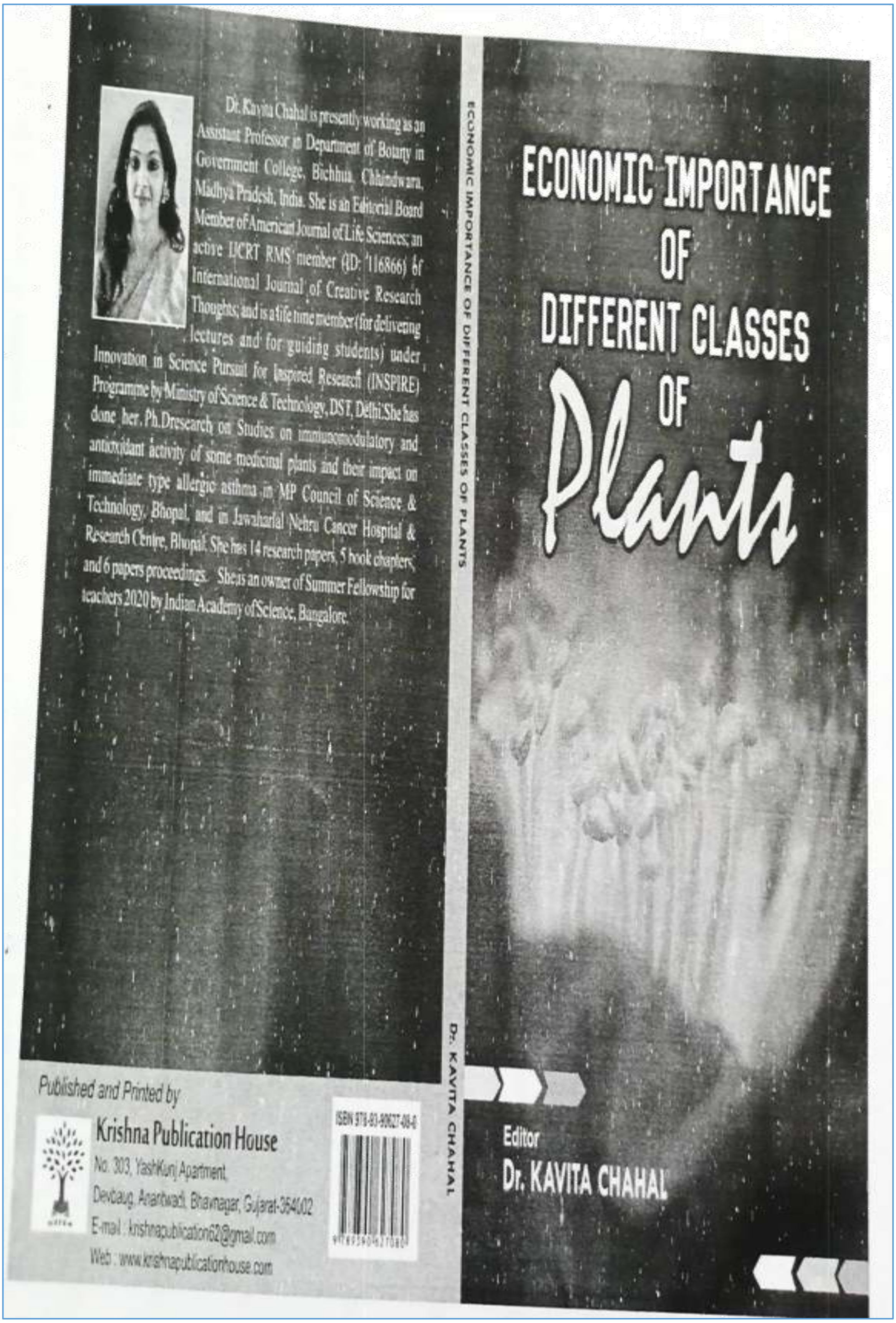
Dr. Kavita Chahal is presently working as an Assistant Professor in Department of Botany in Government College, Bichhua, Chhindwara, Madhya Pradesh, India. She is an Editorial Board Member of American Journal of Life Sciences; an active IJCRT RMS member (ID: 116866) of International Journal of Creative Research Thoughts; and is a life time member (for delivering lectures and for guiding students) under Innovation in Science Pursuit for Inspired Research (INSPIRE) Programme by Ministry of Science & Technology, DST, Delhi. She has done her Ph.D research on Studies on immunomodulatory and antioxidant activity of some medicinal plants and their impact on immediate type allergic asthma in MP Council of Science & Technology, Bhopal, and in Jawaharlal Nehru Cancer Hospital & Research Centre, Bhopal. She has 14 research papers, 5 book chapters and 6 papers proceedings. She is an owner of Summer Fellowship for teachers 2020 by Indian Academy of Science, Bangalore.
Published and Printed by
Krishna Publication House
No. 303, YashKunj Apartment,
Devbaug, Anantwadi, Bhavnagar, Gujarat-364002
E-mail : krishnapublication62@gmail.com
Web : www.krishnapublicationhouse.com
ECONOMIC IMPORTANCE OF DIFFERENT CLASSES OF PLANTS
Dr. KAVITA CHAHAL
ECONOMIC IMPORTANCE
OF
DIFFERENT CLASSES
OF
Plants
Editor
Dr. KAVITA CHAHAL

Cont…….

CONTENTS

1. **Traditional Plant-Based Medicines Against Covid 19- A Review and Perspective**
P. Ruban 1

2. **Importance of Ascomycetes**
Raichur Kalyani 10

3. **Medicinal Importance of Plants**
Sweta Prakash & Kamini Dubey 26

4. **Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm**
Nayantara 46

5. **Industrial Importance of Plants**
Prakash Solanki & Girish Kumar Sharma 61

6. **Economic Impotrance of Gymnosperm**
Dr. Aarti Chouhan & Dr. Rajmal Singh Rao 74

7. **Economic Importance of Angiosperm**
Kamini Dubey & Sweta Prakash 91

8. **Medicinal Importance of Plants**
Dr. Rita. Sangtani 104

9. **Medicinal Importance of Plants : An Overview**
Dr. Pallavi Dixit 113

10. **A Brief Introduction of the use of Plants as A Source of Medicine in Homoeopathy**
Dr. Tilottama B Galande 127

Cont………

Chapter – 4

CHARACTERISTIC FEATURES AND ECONOMIC IMPORTANCE OF GYMNOSPERM

Nayantara
Assistant Professor, Kamla Nehru Girls College, Damoh,
Madhya Pradesh
E-mail : nainu21jan@gmail.com

Abstract

Gymnosperms are plants with a 'naked', or unprotected seed. Gymnosperms live in a variety of habitats worldwide. There are approximately 1000 species of gymnosperms alive today, in four broad divisions: cycads, ginkgos, conifers, and gnetophytes. Many gymnosperms are trees, and some are economically important as a source of timber and pulp. Gymnosperms have been numerous roles in various medicinal systems such as modern medicine, folk and traditional medicinal systems. Most gymnosperms are evergreen, woody perennials.

Keywords : Gymnosperm, species, diversity, economic importance, medicinal plants, ecological role.

****

Introduction :

Gymnosperms are a group of plants that produce seeds that are not containedwithin an ovary or fruit. The seeds are open to the air and are directly fertilized by pollination. "Gymnosperm", from the Greek, gymnos, "naked" and sperma, "seed", develop their seeds on the surface of scales and leaves, which often grow to form cone or stalk shapes. Term Gymnosperm was given by Theophrastus and study of Gymnosperm known as a Gymnosperology. The gymnosperm is very early known seed plants about 350 million years ago i.e. Palaeozoic era but flourished well in Mesozoic period. It has a very diversified path of history of evolution within the group. Many species grew during this period and vanished and no longer existed. Out of four modern gymnosperm commonly grouped as the Cycadales, the Ginkgoales, the Conifersles, and the Gnetales, two of them living members the Ginkgoalesand theCycadales have long fossil history and may be regarded as living fossil. Early Mesozoic which is known as the

SERIAL NO.- 6 : Book Chapter: Smt. PreetiVerma Kishoro Me Tanav aur uska prabandhan P.N. 55 (2021).

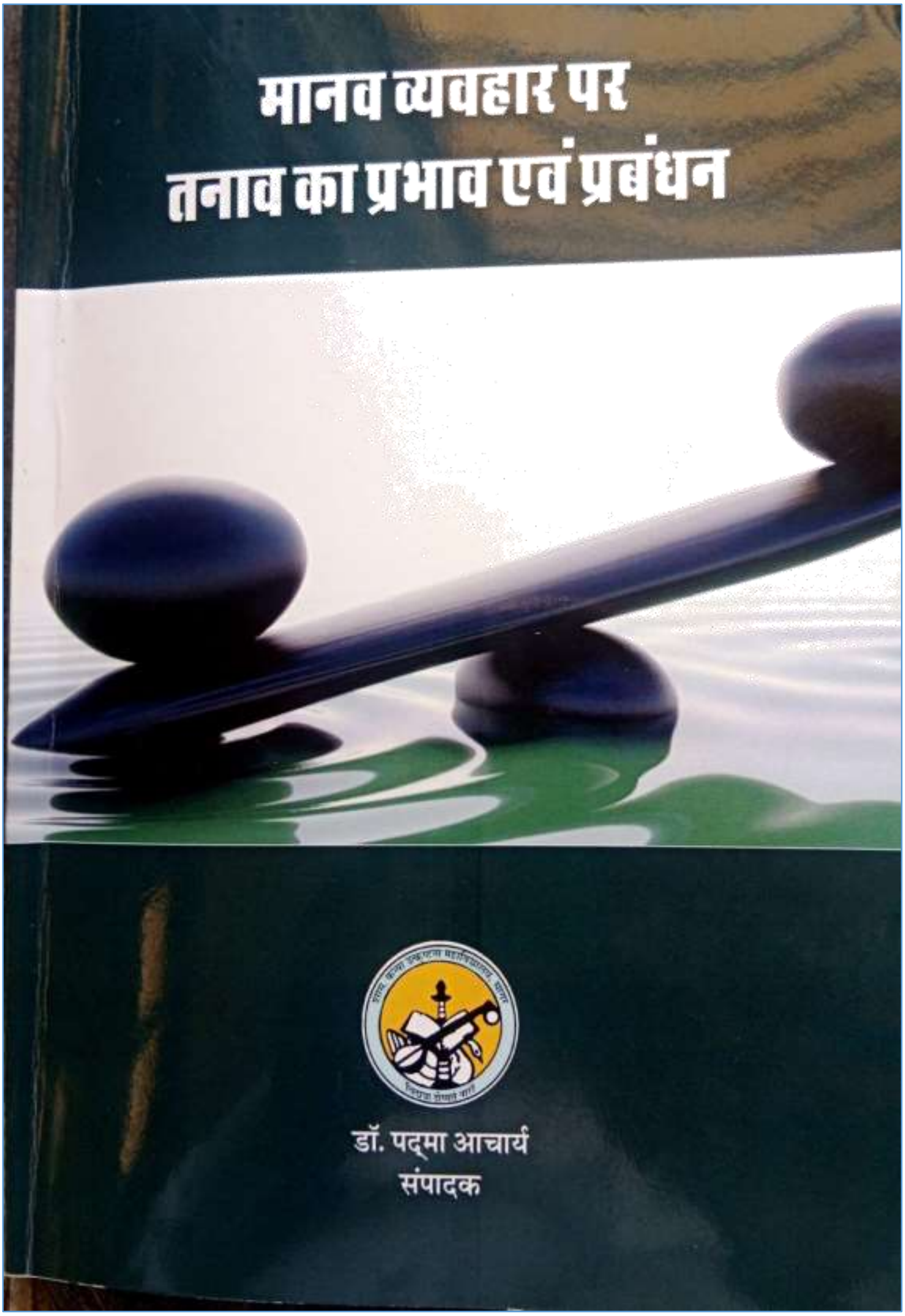

Cont…….

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

डॉ. बी.डी. अहिरवार
संरक्षक/प्राचार्य

●

डॉ. पद्मा आचार्य
संपादक

डॉ. रेखा बख्शी
मार्गदर्शक

डॉ. अंजना नेमा
संकलन सहयोग

एन.डी.पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont…….

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

वेबीनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :

1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021
संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856
अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont……

15	कोविड–19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	दीपिका पिपरदे	51
16	किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन	प्रीति वर्मा	55
17	आधुनिक जीवनशैली और तनाव	प्रीति उइके	57
18	कोविड–19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	डॉ. दिनेश कुमार पवन	59
19	तनाव प्रबन्धन	श्रीमती सुरेखा बड़ौले	63
20	Work Place Strees and its Management	Dr. Rekha Baxy	65
21	Stress - management towards women's job in Raipur city	Saumya Mishra Dr. Abha Tiwari	70
22	Impact of Stress on Human Behaviour and it's Management (Methods of Stress Management)	Dr. Nanda Gurwara	79
23	Corona Virus (Covid-19) and Stress Management	Dr. Basanti Jain	87
24	Nutrition and mental health	Dr. Anjana Nema	90
25	Modern life style and stress	Dr. Rashmi Singh	96
26	Diverse Dimensions of Tension due to Covid-19	Dr. Pratibha Shrivastava	99
27	Stress in the Perspective of Workplace	Dr. Bishnu Deo Mochi	103
28	Effect of Stress on Physical Health in childhood During Covid-19	Mrs. Madhuri Palle	106
29	Impact of stress on human behavior and management	Er. Shrikant Singh Rashmi Singh	109
30	Pandemic covid -19 stress and its management to households in Jabalpur city	Dr. Abha Tiwari	115
31	Teas to relieve and calm stress and anxiety while working from home	Dr. Madhuka Shrivastava Laloraya	123

Cont…….

किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन

प्रीति वर्मा
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग
शासकीय कमला नेहरु महिला महाविद्यालय दमोह

आजकल की भाग दौड भरी जिंदगी में लोगों का जीवन तनावपूर्ण होता जा रहा है व्यक्ति अपनी जिंदगी जीने के बजाय अपनी जरुरतों को पूरा करनें के पीछे भाग रहे है और जब वह जरुरतें पूरी नहीं होती तो वह तनाव ग्रसित हो जाते है। आज हर आयु वर्ग तनाव का सामना कर रहा है – बच्चों में अपने स्कूलों में अच्छे अंक लाने का तनाव, वयस्को में अपने परिवार की सुख सुविधाओं को पूरा करने का तनाव और वृद्धावस्था में अकेलापन दूर करने का तनाव होता है। इन सभी आयु वर्ग में से सबसे ज्यादा किशोर वर्ग तनाव का सामना कर रहें है, वह एक तो अपने शारिरिक बदलाव को समझनें में परेशान रहतें है एवं उसके बाद परिवार द्वारा लगाई गई रोक टोक से उन्हे लगता है कि उनसे उनकी आजादी छीनी जा रही है जिससे किशोर अधिक तनाव में आ जातें है। इसकें साथ ही साथ उन्हें अपना कैरियर संभालने का भी तनाव रहता है, जिसके कारण उनके अंदर अंतर्द्वद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किशोरावस्था एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें बहुत अधिक उथल पुथल पाया जाता है। मनोवैज्ञानिक दशा के कारण लडके लडकियां विपरीत यौन में रुचि लेने लगते है। इस आयु के किशोरों में यौन संबधी व्यवहारों की रोकथाम बहुत कम हो पाती है, किशोरावस्था में अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याएं उत्पन्न होती है जो उसके व्यवसाय समायोजन , यौन आदि से संबधित होती है जो उसके व्यक्तित्व विकास को भी प्रभावित करती है और इन सब में समायोजन होने के कारण किशोरो में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

किशोरो में तनाव का कारण

किशोरों में तनाव का प्रमुख कारण उनके अंदर का अंतर्द्वंद होता है जो अपने परिवार से साझा नहीं कर सकते हैं। वह अपनें शरीर में हो रहे बदलाव के बारे में अपनें माता पिता से बात करने में हिचकिचाते है एवं घर के बाहर अपने दोस्तो से पूंछते हैं जिसके कारण वह कभी कभी गलत आदतों में पड़ जाते हैं एवं माता –पिता द्वारा रोक टोक उन्हे पसंद नहीं आती एवं ज्यादा आकामक व्यवहार अपना लेते हैं। अपने भविष्य को लेकर चिंता एवं अपने माता – पिता की आशाओं पर खरा उतरनें की चिंता भी किशोरो को तनाव से ग्रसित कर सकती है। किशोर का सपना कुछ और बनने का होता है पंरतु माता–पिता अपनी इच्छानुसार विषय लेने के लिऐ बच्चों पर दबाव देते हैं जिसके कारण किशोर में अत्यंत तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और अपनी परेशानी किसी से कह नहीं पाते एवं अपने आपको परिवार से अलग करने लगते है और अकेले रहना ज्यादा

SERIAL NO.- 7: Book Chapter: Smt. Surekha Badole Corona Virus Evum Maansik Tanaav P.N. 63 (2021).

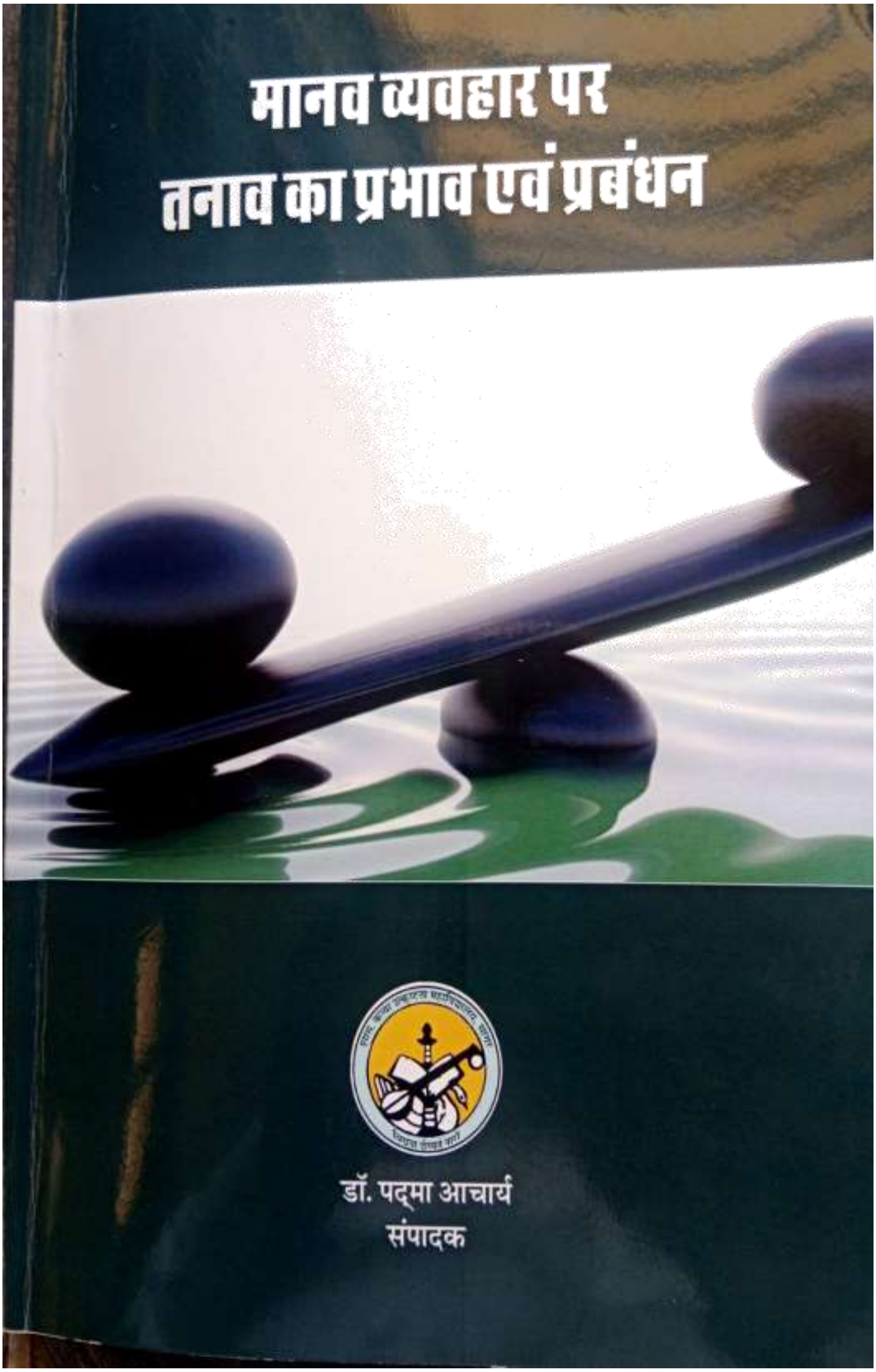

Cont…..

मानव व्यवहार पर
तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

डॉ. बी.डी. अहिरवार
संरक्षक/प्राचार्य

●

डॉ. पद्मा आचार्य
संपादक

डॉ. रेखा बख्शी
मार्गदर्शक

डॉ. अंजना नेमा
संकलन सहयोग

एन.डी.पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont…..

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

वेबीनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :
1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021
संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856
अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont…..

15	कोविड–19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	दीपिका पिपरदे	51
16	किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन	प्रीति वर्मा	55
17	आधुनिक जीवनशैली और तनाव	प्रीति उइके	57
18	कोविड–19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	डॉ. दिनेश कुमार पवन	59
19	तनाव प्रबन्धन	श्रीमती सुरेखा बड़ौले	63
20	Work Place Strees and its Management	Dr. Rekha Baxy	65
21	Stress - management towards women's job in Raipur city	Saumya Mishra Dr. Abha Tiwari	70
22	Impact of Stress on Human Behaviour and it's Management (Methods of Stress Management)	Dr. Nanda Gurwara	79
23	Corona Virus (Covid-19) and Stress Management	Dr. Basanti Jain	87
24	Nutrition and mental health	Dr. Anjana Nema	90
25	Modern life style and stress	Dr. Rashmi Singh	96
26	Diverse Dimensions of Tension due to Covid-19	Dr. Pratibha Shrivastava	99
27	Stress in the Perspective of Workplace	Dr. Bishnu Deo Mochi	103
28	Effect of Stress on Physical Health in childhood During Covid-19	Mrs. Madhuri Palle	106
29	Impact of stress on human behavior and management	Er. Shrikant Singh Rashmi Singh	109
30	Pandemic covid -19 stress and its management to households in Jabalpur city	Dr. Abha Tiwari	115
31	Teas to relieve and calm stress and anxiety while working from home	Dr. Madhuka Shrivastava Laloraya	123

Cont…

तनाव प्रबन्धन

श्रीमती सुरेखा बड़ौले
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान
शास. कमला नेहरु महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

तनाव मनःस्थिति से उपजा एक विकार है जो मनःस्थिति एवं परिस्थिति के बीच असंतुलन एवं असांमजस्य के कारण उत्पन्न होता है। तनाव हमारे सोचने समझने की प्रक्रिया को खत्म करता है। जिससे मन अशान्त भावना अस्थिर एवं शरीर अस्वस्थता का अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में हमारी कार्यक्षमता प्रभावित होती है और हमारी शारीरिक गतिविधियाँ या मानसिक विकास में व्यवधान उत्पन्न होता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते है, जो कि शारीरिक तथा मानसिक बैचेनी को बढ़ावा देते हैं और वह रोग निर्माण का एक कारक बन सकता है जिनमें सदमा, संक्रमण, विष तथा किसी भी प्रकार की चोट शामिल है। जिसका सीधा असर मानव मस्तिष्क पर पड़ता है।

तनाव से तात्पर्य– शारीरिक और भावनात्मक रूप से चिंता महसूस होना है। यह भावना किसी भी घटना या विचार से आ सकती है। जिससे किसी व्यक्ति को निराशा गुस्सा या घबराहट महसूस हो। तनाव की पारम्पारिक परिभाषा शारीरिक प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। इस विषय पर मनोचिकित्सक हैल शैल ने तनाव शब्द को शरीर की किसी भी आवश्यकता के आधार पर अनिश्चित प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया है और जो ऐड्रिनल और अन्य ग्रन्थियों द्वारा स्रावित होते हैं। तनाव मुख्य रूप से किसी चुनौती या मुश्किल भरे समय में मानव शरीर की प्रतिक्रिया है।

तनाव दो प्रकार का होता है–

1. सकारात्मक तनाव 2. नकारात्मक तनाव

तनाव के लक्षण–

1. सिरदर्द व पीठ दर्द
2. नींद न आना
3. गुस्सा और हताशा होना
4. किसी एक चीज पर ध्यातन न लगा पाना
5. दूसरो को नजर अंदाज करना
6. मन से दुखित होना
7. शारीरिक बैचेनी
8. विस्मृति
9. कार्य क्षमता की कमी

तनाव के कारण–

1. संतुलित आहार का सेवन
2. बदलती शैली
3. मानसिक तनाव में नींद की कमी

SERIAL NO.- 8 : Book Chapter: Dr. Aprana Devi Goswami. SUPPORT-LED SOCIAL SECURITY PROGRAMMES FOR THE UNORGANISED SECTOR (2021).

SUPPORT-LED SOCIAL SECURITY PROGRAMMES FOR THE UNORGANISED SECTOR

Dr. Aparna Goswami

Dept. of Economics,

Government S.S. N.M College,Narsingpur,(M.P.)

Abstract

In the Indian context, Social Security is a comprehensive approach designed to prevent deprivation, assure the individual of a basic minimum income for himself and his dependents and to protect the individual from any uncertainties. The State bears the primary responsibility for developing appropriate system for providing protection and assistance to its workforce. Social Security is increasingly viewed as an integral part of the development process. It helps to create a more positive attitude to the challenge of globalization and the consequent structural and technological changes. The unorganized sector on the other hand, is characterized by the lack of labour law coverage, seasonal and temporary nature of occupations, high labour mobility, dispersed functioning of operations, casualization of labour, lack of organizational support, low bargaining power, etc. all of which make it vulnerable to socio-economic hardships.The unorganized sector workers are those who have

Cont……..

not been able to pursue their common interests due to constraints like casual nature of employment, invariably absence of definite employer-employee relationship, ignorance, illiteracy, etc. The unorganised workers are also generally low paid and a majority of them are devoid of any of the social security benefits like life and medical insurance, health care, maternity benefits, and old age pension etc.

This paper analysis an overview of the support-led social security arrangements for the unorganized sector in India. On support-led security programs, it concentrates on preventive and protective schemes for the unorganized sector. Although the coverage in not high, several state governments have attempted to provide various protective social security measures for the unorganized poor and vulnerable sections of the society. This paper tries to find out the issues in social security for the unorganized sector and how do growth-promoting polices help the unorganized worker? This paper find that the support-led social security programs for the unorganized sector at level of state and all India. This paper reviews Importance of Unorganized Sector and Organized Versus Unorganized Sector Employment situation in year 1999 to 2010. Unorganized or unorganized sector constitutes a pivotal part of the Indian economy. More than 90 per cent of workforce and about 50 per cent of the national product are accounted for by the unorganized economy. The paper argues

Cont……..

that the government providing social security for the section of unorganized workers but there is a need for public- private partnership for providing social and economic security to the unorganized workers.

Introduction

It is by now well-known that the term 'Social security' in the developing countries is used in a much broader sense than that used in the developed countries. Depending on the country's economic development, different packages of social security measures have been advocated. Dreze and Sen (1989) distinguish two contrasting approaches for raising the living standards. One approach is to promote economic growth in order to improve private and public incomes. This is termed as 'support–led security'. In this approach wide-ranging public support is given in areas such as employment provision, income re-distribution, health care, education and social assistance to workers belonging to the unorganized sector. India has relied on both growth – promoting and support-led policies to help the unorganized workers. Regarding support-led policies to help the country has relied more on promotional measures (self-employment and wage employment programs, general health and education, etc.) The neglect of conventional social security benefits for the poor workers is based on the assumption that in a country like India, the poor workers are so numerous and the problem of absolute poverty is so massive that comprehensive social security would be fiscally impossible. Given endemic unemployment and under-employment, and programme of unemployment benefits would attract a large fraction of the unorganized labour force and hence would be extremely costly. The focus and bulk of spending in India, therefore, have been on "promotional" forms of direct anti-poverty programmes as opposed to "protective" interventions."

SERIAL NO.- 9: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Pradooshan ki giraft my fasta hua samposhaneey vikaas.

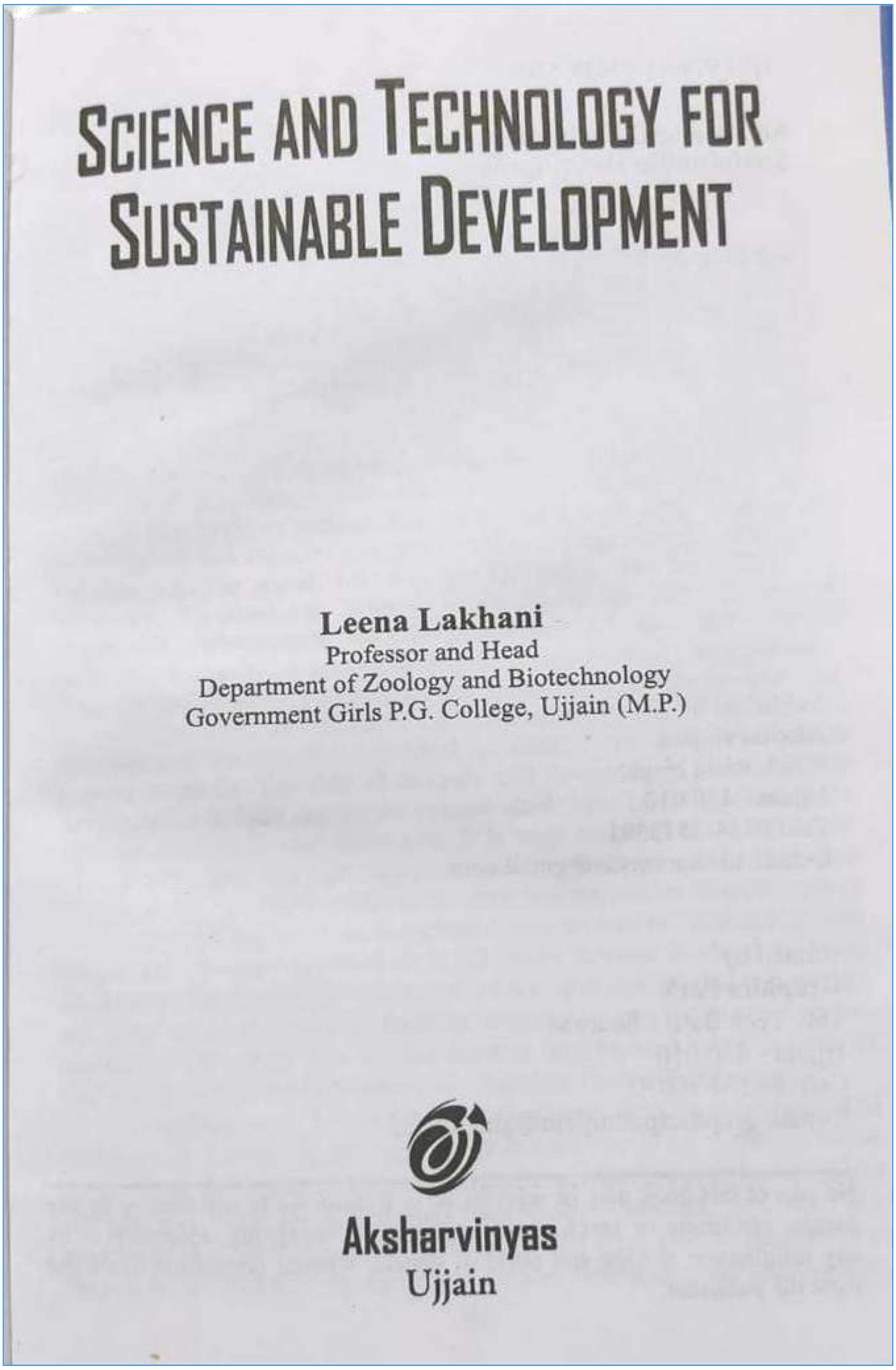
SCIENCE AND TECHNOLOGY FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Leena Lakhani
Professor and Head
Department of Zoology and Biotechnology
Government Girls P.G. College, Ujjain (M.P.)

Aksharvinyas
Ujjain

Cont……..

10 Accelerator Mass Spectrometry: An Overview and its Application in Environmental Issues 50
- Punam Mehta

11 Soil Conservation and its Methods and Techniques for Sustainable Development 56
- Rajkumari Batham and Ulka Yadav

12 Acute Toxicity of the Fresh Water Fish *Tilapia Mossambica* Exposed to Parathion 61
- Rashmi Patidar

13 Environmental Impact on Diversity of Waterfowl of Solah Sagar Talab, Ujjain (M.P.) 66
- Saroj Vikram Ratnakar and Vikram Ratnakar

14 Disaster Management 71
- Seema Sharma

15 Climate Change and its Impact on the Environment 73
- Seema Trivedi

16 How Organic Farming Benefits the Environment 76
- Sheeba Khan and Leena Lakhani

17 Behavioral Changes in Heteropneustes Fossilis Exposed to Lead Acetate and its Amelioration with Curcuma Longa (Turmeric) 84
- Showkat Ahmad Shah and Lata Bhattacharya

18 Pollution and Human Health 88
- Vikrant Shah

19 New Challenges and Threats to Environment 94
- Vinod Kumar Gupta and S.K. Shastri

vi

20 जैविक खेती, भारतीय कृषि का भविष्य
- आभा दीक्षित

21 प्रदूषण की गिरफ्त में फँसता हुआ संपोषणीय विकास
- असलम खाँन

22 जलवायु परिवर्तन और उसका पर्यावरण पर प्रभाव
- छाया हार्डिया एवं प्रियंका वर्मा

23 भारत में जैविक खेती एवं संभावनाएँ
- प्रियंका वर्मा एवं छाया हार्डिया

24 प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य
- रंजना शर्मा (व्यास)

25 पर्यावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य
- रेखा सूर्यवंशी

26 मानव स्वास्थ्य पर पर्यावरण प्रदूषण का बढ़ता दुष्प्रभाव : एक अध्ययन
- सुमन जैन एवं आशा सक्सेना

vii

Cont……..

में कार्बनडाईऑक्साईड की बढ़ती दर से जीवाश्म के दहन के कारण कार्बनडाईऑक्साईडका अधिकाधिक मात्रा में वायुमण्डल में मिश्रण एवं त्रीव गति से वन विनाश के कारण वन क्षेत्रों में ह्रास होने के कारण कार्बनडाईऑक्साईड के उपयोग में दिनों दिन कमी हो रही है। परिणामस्वरूप ग्रीन हाऊस प्रभाव में वृद्धि हो रही है। ग्रीन हाऊस गैसों का प्रभाव क्रमशः कार्बनडाईऑक्साईड 55 प्रतिशत, क्लोरोफलोरो कार्बन 24 प्रतिशत, मीथेन 15 प्रतिशत, नाईट्रोजनआक्साईड 6.0 प्रतिशत है।[2] इससे वातावरण में गर्मी का माहौल होता है। जिससे वर्षा तथा मृदा नमी में कमी, महासागरीय जल की अम्लता में वृद्धि, हिम टोपियां एवं हिम नदियों के पिघलने आदि विनाशकारी घटनाओं से संपोषणीय विकास प्रभावित हो रहा है।

वर्तमान में प्रत्येक देश औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा सँस्कृति का उपलब्ध संसाधनों के विदोहन कर विकास के पथ पर प्रगतिशील है। कारखानों, तापशक्ति गृहों तथा नाभिकीय शक्ति संयंत्रों आदि से उत्सर्जित ऊष्मा, वायु आरोहण से वायुमण्डल में पहुँच रही है। तापीय वायुप्रदूषण संपोषणीय विकास को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान युग में वैश्वीकरण औद्योगीकरण, नगरीकरण के साथ मानव जनसंख्या में त्रीव गति से वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत देश की जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 1210193422 है।[3] इतने अधिक बढ़ी हुई जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दिन प्रतिदिन दबाव बड़ रहा है। जल प्रदूषण से जलीय जीव जगत के अलावा प्राणी जगत को भी संकट पैदा हो रहा है।भारत में 1 लाख से अधिक आबादी वाले 192 नगरों में से केवल 08 नगर ऐसे है जिनमें मल-मूत्र और अन्य गंदगी के उपचार या निकास की वैज्ञानिक व्यवस्था है जबकि 62 नगरों में सीवेज उपचार या निकास की थोड़ी बहुत व्यवस्था तथा शेष 72 नगरों में सीवेज उपचार की कोई व्यवस्था नहीं है।[4] विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रदूषित जल के कारण प्रतिवर्ष 5 लाख बच्चे मर जाते है, भारत में प्रतिलाख लगभग 360 व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है और सम्पूर्ण विश्व में 1.5 करोड़ व्यक्ति प्रदूषित जल के कारण मौत के घाट उतर जाते है।[5] जल स्त्रोत के आधार पर घरेलू अपशिष्ट से जल प्रदूषण, सीवेज से जल प्रदूषण, औद्योगिक अपशिष्ट से जल प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट से जल प्रदूषण तथा जल भण्डारण के आधार पर धरातलीय जल प्रदूषण, झील जल प्रदूषण, समुद्री जल प्रदूषण, भूमिगत जल प्रदूषण आदि ने संपोषणीय विकास को प्रभावित किया है। एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रदूषित जल से होने वाली बीमारियों से लगभग 7 करोड़ 30 लाख कार्य दिवस नष्ट हो जाते हैं और

Cont……..

Leena Lakhani
Ph.D., F.I.S.C.A., F.V.M.S.
F.A.S.E.A., F.I.C.H.E., F.S.L.Sc.

Professor of Zoology at Govt. Girls P.G. College, Ujjain (A Centre for Excellence). Over 42 years of teaching experience.

Sixty research papers and articles have been published in various International and National Peer Reviewed Journals. Chief Editor for special issue on 'Social Issues and Environmental problems' in an International Journal *Granthaalayah* and has also authored a book on 'Manual of Experiments in Biotechnology'. More than 100 research papers are presented in International, National Seminars. Convened and organized so many National Seminars, Workshops, Training programs and Faculty Development Programs related with Environment, Science and Molecular Biology, Use of ICT tools in Digital Pedagogy, FDP on Research Article Writing and Online Academic Presentation.

Awarded with Outstanding Performance for 2015 by Action for Sustainable Efficacious Development and Awareness (ASEA), Rishikesh, India; International Best Teacher Award for 2016 by International Science Community Association, Indore, India; Life Time Achievement Award for 2017 by Shri Shivaji Education Society Amravati's, Science College, Nagpur, India.; Honored by Municipal Corporation of Ujjain, India on Teachers Day on 5th September 2017; and Awarded with Prof. Ram Kumar Sharma Memorial Award 2020 for Outstanding Performance and Lasting Contribution in the field of Life Sciences by ASEA, Rishikesh India.

₹ 600.00
ISBN 978-93-85438-57-8
9 789385 438578 >

Aksharvinyas
F-6/3, Rishi Nagar
Ujjain - 456 010 (M.P.)
Phone: 0734-2512591
Email: aksharvinyas@gmail.com

POCO
SHOT ON POCO M2 PRO

SERIAL NO.- 10: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Bharteey Arthvyavastha par corona virus ka prabhav PN. 129-139 (2020).

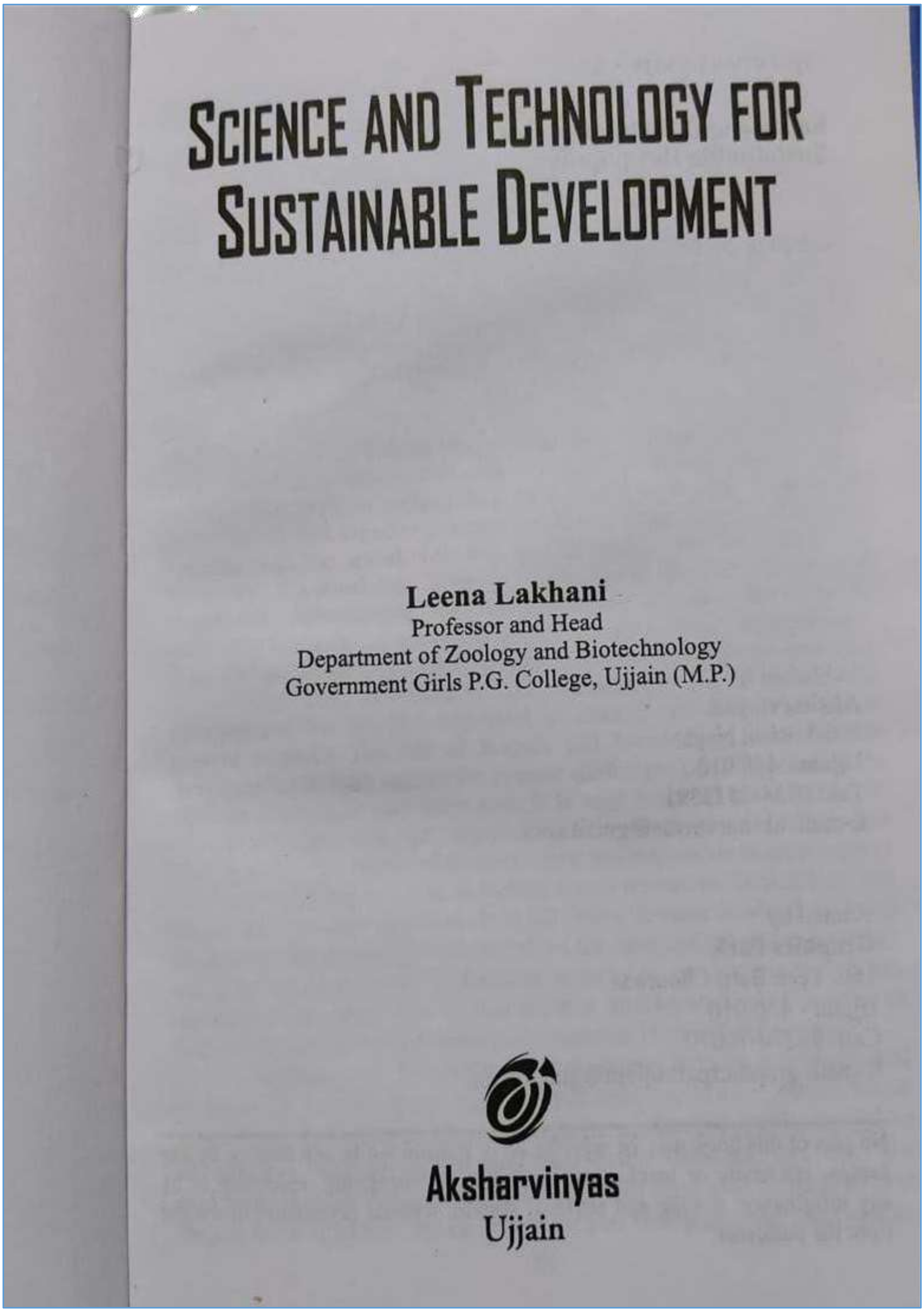

SCIENCE AND TECHNOLOGY FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Leena Lakhani
Professor and Head
Department of Zoology and Biotechnology
Government Girls P.G. College, Ujjain (M.P.)

Aksharvinyas
Ujjain

Cont…….

INDIAN PHILOSOPHICAL BELIEF IN CONTEXT OF CORONA

भारतीय दार्शनिक विश्वासः कोरोना के संदर्भ में

सम्पादक

डा0 अनिलेश कुमार सिंह
वि.प्र., दर्शनशास्त्र विभाग,
के.जी.के.पी.जी. कालेज, मुरादाबाद

डा0 शिवपूजन सिंह यादव
दर्शन शास्त्र विभाग,
के.जी.के.पी.जी. कालेज, मुरादाबाद

Published By:
ANU BOOKS
Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us: www.anubooks.com

Cont…….

Indian Philosophical Belief in Context of Corona

भारतीय दार्शनिक विरासत एवं परम्परागत विश्वास:
कोरोना से बचाव के लिए

First Published: **June 2020**

ISBN: **978-93-87922-08-2**

Price : **500 /-**

*Copyright © **EDITOR***

Contributors are solely responsible for the ideas expressed in their submitted articles for publication. Editors and publisher are not resonsible for it. Contributors are also responsible for the cases of plagiarism.

Printed by :

AnVi Composers, New Delhi

Published by :

Anu Books

H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996

Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837

Glasgow (UK)+447586513591

Cont……

Content

- **Indian Traditional Beliefs and Values: In Context of Prevention from COVID-19**
  Dr. Narender Singh, Rashmi Chahal 1
- **Impact of COVID-19 on Health Sector**
  Dr. Anupma Srivastava Diksha Mishra 9
- **COVID-19: Socio-Religio-Cultural Aspects in Relation to Prevent Corona Spread**
  Mukesh Kumar 22
- **Science of Living : The Great Indian Cultural Heritage**
  Dr. Anil Kumar 29
- **Impact and Preventions of Covid -19 on Indian Economy**
  Dr Kamal Singh 38
- **Indian Philosophical Heritage, Traditional Belief and Values: In Context of Prevention from Covid-19**
  Dr. Reeta Kumari Dixit 44
- **Indian Traditional Beliefs and Practices for Preventing Corona Virus**
  Dr. Shaifali Agarwal, Shilpi Saxena 48
- **Role of Indian Traditional Culture and Values in the Prevention of Corona Pandemic**
  Dr. Bhawna Bisht 62
- **Indian Philosophy in Context of Pandemics: The Path to a Healthy, Happy and Sustainable Life**
  Sqn Ldr Toolika Rani (Retd.) 66
- **Changes in Traditional Beliefs and Processes in Hotels due to Covid 19**
  Sanjay Wadhwa 77

Cont……

- कोविड–19 के लक्षण एवं दुष्प्रभाव– एक अध्ययन
  डॉ. विमलेश कुमार 91
- वर्तमान में कोरोना वायरस मानव जाति पर एक गंभीर खतरा
  डॉ0 सुधा सिंह 97
- कोरोना संकट और जैन दर्शन
  महेन्द्र सिंह 101
- कोविड–19 और सांप्रदायिक सद्भाव
  नीतू जेवरिया 106
- कोविड–19 : मानवता के लिए अभिशाप में छिपा पर्यावरण हेतु वरदान
  डॉ. प्रियंका यादव 109
- कोरोना वायरस और भारतीय अर्थव्यवस्था
  पूनम चौहान 115
- भारतीय संस्कृति व परम्परागत विष्वास एवं मूल्यः कोविड – 19 के बचाव के सन्दर्भ में
  डा0 शिखा बंसवाल 122
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस का प्रभाव
  डॉ. असलम खॉन 129
- कोविड–19 : उत्तर कोरोना काल में उच्च कक्षा कक्ष के परिवर्तित रूप
  उमा गुप्ता 134

Cont……

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस का प्रभाव

डॉ. असलम खॉन
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र),
शास. कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सन् 2019 का दिसम्बर ने विश्व के लिए एक ऐंसी महामारी से लड़ने के लिए साक्षी बना जिसने सारी दुनिया को थाम दिया। सारा विश्व इस महामारी से अछूता नहीं है। इस महामारी का नाम है कोविड19 । यह एक ऐंसा वायरस है जो इतने जल्दी से फैलता है जिसकी मानव जाति ने कभी कल्पना नहीं की होगी। वास्तव में इस वायरस ने दुनिया की चाल को रोक दिया है। वास्तव में इस वायरस ने दुनिया की चाल ही बदल दी है। सारा विश्व कारोना वायरस के आंतक से परेशान हो रहा है। जिससे सारे विश्व के साथ –साथ हमारा देश भी प्रभावित हो रहा है। कोरोना वायरस का प्रकोप सबसे पहले 31 दिसंबर 2019 को वुहान चीन में हुआ था। यह एक ऐंसा वायरस है जो कि सपर्क में आने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में असानी से फैल रहा है। इससे धन के साथ–साथ जन की भी हानि हो रही है। सारा विश्व इस महामारी से मर मर कर लड रहा है। वर्तमान में सावधानी के अलावा इससे लड़ने का कोई भी उपाय, दवाई और टीका का अविष्कार नहीं हुआ है। एक दो देशों ने दवा बनाने का दवा किया पर कब आयेगी ये तो वक्त बतायेगा। पर ये बात आवश्य है कि इसने सारे विश्व की मानव जाति को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

नॉवेल कोरोना वायरस, वायरस का एक नया प्रकार है जो कि अभी तक मानव में नहीं पाया गया था। इस वायरस के कारण मानव के शरीर का तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है जिस कारण उसका शरीर गर्म हो सकता है और उसे ठंडी महसूस हो सकती है। व्यक्ति को शरीर में कपकपी भी महसूस हो सकती है, इसके कारण गले में खराश, सिरदर्द और डाएरिया भी हो सकता है। हाल में आए एक ताजा शोध के अनुसार कुछ खाने पर स्वाद महसूस न होना और किसी चीज की गंध का महसूस न होना भी कोरोना वायरस का लक्षण हो सकता है। माना जा रहा है कि कोरोना वायरस के लक्षण दिखने में शुरु होने से औसतन पांच दिन का वक्त लग सकता है लेकिन कुछ लोगों में उनकी रोगमारक क्षमता के आधार पर अधिक या कम भी हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायरस के शरीर में पहुंचने और लक्षण दिखने के बीच 14 दिनों तक का समय हो सकता है। यदि वास्तव में देखा जाय तो अभी तक ये पूरी तरह से पता नहीं चल सका है कि कोरोना वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में कैसे फैलता है। हालांकि इससे मिलते.जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए

SERIAL NO. - 11: Book Chapter: Dr. Mudita P. Shrivastav. Vridhaawastha evum Shaskhiya Neetiya (2019).

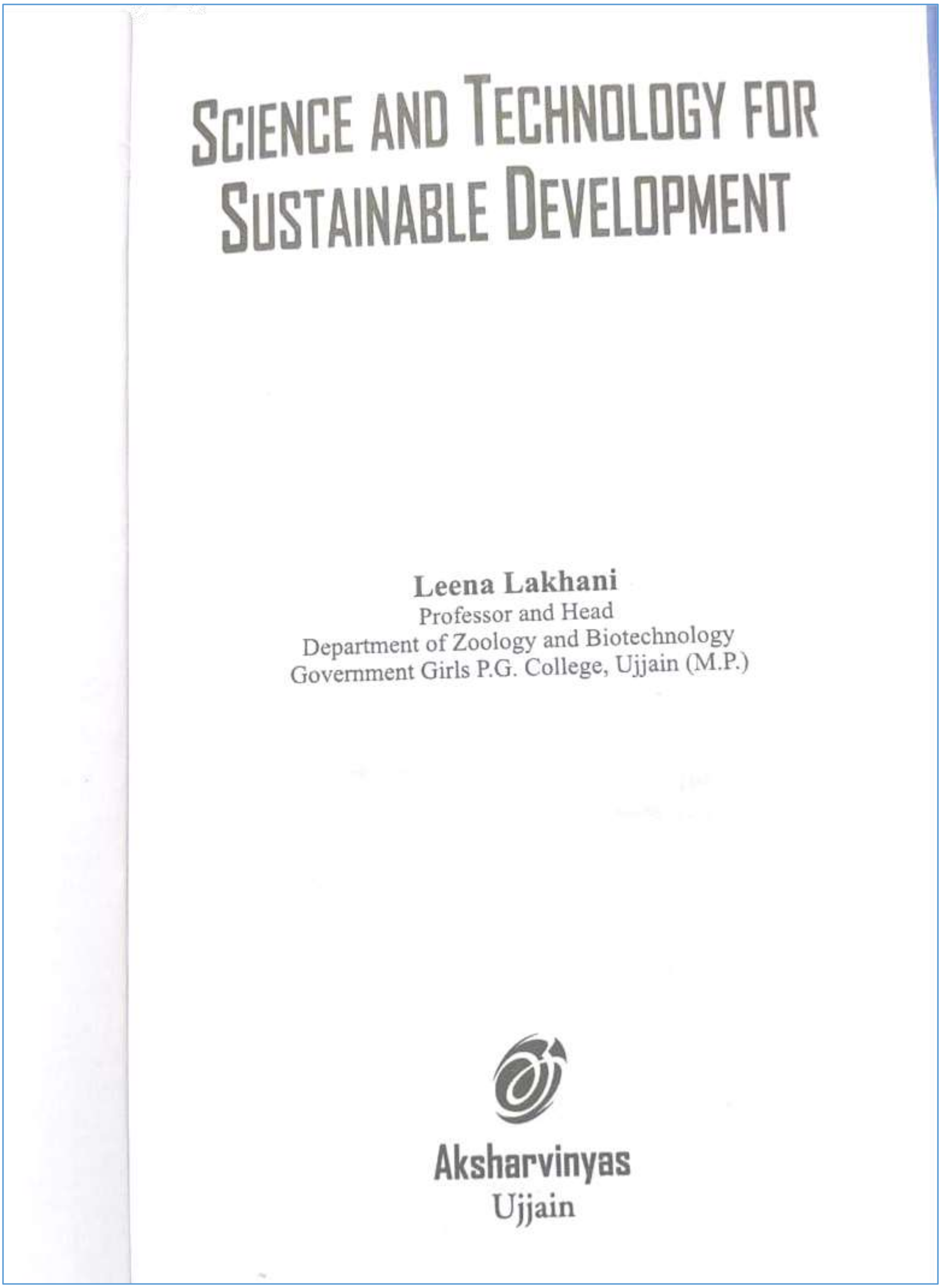

SCIENCE AND TECHNOLOGY FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Leena Lakhani
Professor and Head
Department of Zoology and Biotechnology
Government Girls P.G. College, Ujjain (M.P.)

Aksharvinyas
Ujjain

Cont……

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

"भारतीय समाज में वृद्धजन"

जनवरी 10, 2019

प्रोसीडिंग्स्

डॉ. गीता श्रीवास्तव
संरक्षक

डॉ. सुषमा पेंढारकर
संपादक

डॉ. सुधा मेहता
सह संपादक

- प्रायोजक -
उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल

- आयोजक -
समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग

शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
नैक द्वारा प्रदत्त 'A' ग्रेड

Cont………

प्रकाशक : समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग
शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी
महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

वर्ष : मार्च 2019

प्रतियाँ : 100

मूल्य : ₹ 300

मुद्रक : डिज़ाइन एन प्रिंट
जबलपुर

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नोट : प्रकाशित लेखों की प्रमाणिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

नोट : दिनांक 10 जनवरी 2019 को शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) में आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी – 'भारतीय समाज में वृद्धजन' में प्रस्तुत/प्रेषित शोध–पत्रों का प्रकाशन

ISBN Number: 978-93-5351-898-1

Cont…………..

क्र.	विवरण	लेखक	पेज नंबर
39	वृद्धावस्था एवं शासकीय नीतियां	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	248
40	वृद्ध महिलाओं की स्थिति की पृष्ठभूमि	डॉ. नंदिनी भारिल्ल, डॉ. भरतेश भारिल्ल	252
41	वृद्ध लोग : समाज की सामूहिक जिम्मेदारी	प्रो. पद्मा महेश्वरी	256
42	समाज एवं वृद्धावस्था और समाधान	पूनम ललखेर	261
43	समाज एवं वृद्धावस्था	प्रभाकर सिंह	275
44	भारतीय समाज में वृद्धजन की भूमिका	राजेश कुमार मर्सकोले	286
45	समाज और वृद्धावस्था	डॉ. साधना सिंह बिसेन	296
46	"भारतीय समाज में वृद्धजन" समाज एवं वृद्धावस्था	पी. मालवे / उइके	302
47	भारतीय समाज मे वृद्धावस्था की चुनौतियाँ	डॉ. (श्रीमति) किरण कुमार	309
48	भारतीय समाज में वृद्धजन: समस्याएँ और कानून	डॉ. तृप्ति उकास	313
49	वृद्धावस्था के प्रति सोच एवं सुझाव	डॉ. वन्दना गुप्ता	321
50	वृद्धावस्था– शारीरिक दुर्बलता से अधिक मानसिक दुर्बलता	डॉ. मनीष खरे	324
51	वृद्ध व्यक्तियों की समस्याओं के कल्याण कार्यक्रम व सरकारी प्रयास	डॉ. शोभना पाण्डेय	329
52	भारतीय समाज में वृद्ध की स्थिति	डॉ. श्रीमती किरण शुक्ल	333
53	समाज एवं वृद्धावस्था	डॉ. मुक्ता ब्यौहार, डॉ. विनीता महोबिया	338
54	भारतीय समाज में वृद्धावस्था एक चुनौती	डॉ. शिखा गुप्ता	344
55	वृद्धजन के प्रति बदलते प्रतिमान: सामाजिक चुनौती	डॉ. श्रीमति कुसुम गौतम	347
56	Elderly persons: Assets or Liabilities	Dr. (Mrs.) Debmitra Roy, Dr. G.K. Soni,	353
57	बच्चों के व्यक्तित्व विकास में वृद्ध की भूमिका	डॉ. सुषमा मेहरा	356
58	भारतीय समाज में वृद्ध आश्रम एवं कल्याणकारी योजनाऐं	अमृत लाल झारिया, आनंद प्रकाश झारिया	360

Cont……….

वृद्धावस्था एवं शासकीय नीतियां

डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

वृद्धावस्था या बुढ़ापा जीवन की उस अवस्था को कहते हैं, जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है, वृद्धावस्था एक धीरे धीरे आने वाली अवस्था है। जो कि स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है बड़ा हुआ, पका हुआ, परिपक्व।

किसी भी समाज की जनसंख्या में वृद्धों (प्रौढ़ों, अधेड़ों या वयोवृद्धों) का अनुपात उसके विकास को काफी हद तक प्रभावित करता है। सामान्यतः वृद्ध उस व्यक्ति को कहा जाता है। जिसने 60 वर्ष की आयु पूरी कर ली है. समाज विद्वानों द्वारा वृद्धों की दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है– युवा (60 से 75 वर्ष के मध्य) तथा वृद्ध (75 वर्ष से अधिक)।

पिछले कुछ दशकों से पूरे विश्व में वृद्धों की जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। इसका प्रमुख कारण शिशु मृत्यु दर में कमी, चिकित्सा विज्ञानों में प्रगति तथा स्वास्थ्य की देखरेख में सुधार संबंधी सुविधाओं में वृद्धि है, भारत में वृद्धों की औसत आयु बढ़ गई है तथा पिछले कुछ वर्षों में के मुकाबले उनका स्वास्थ्य की भी बेहतर होता जा रहा है।

SERIAL NO. - 12: Book Chapter: Dr. Aradhana Shrivas. “Apada Aur Jalvayu(2016

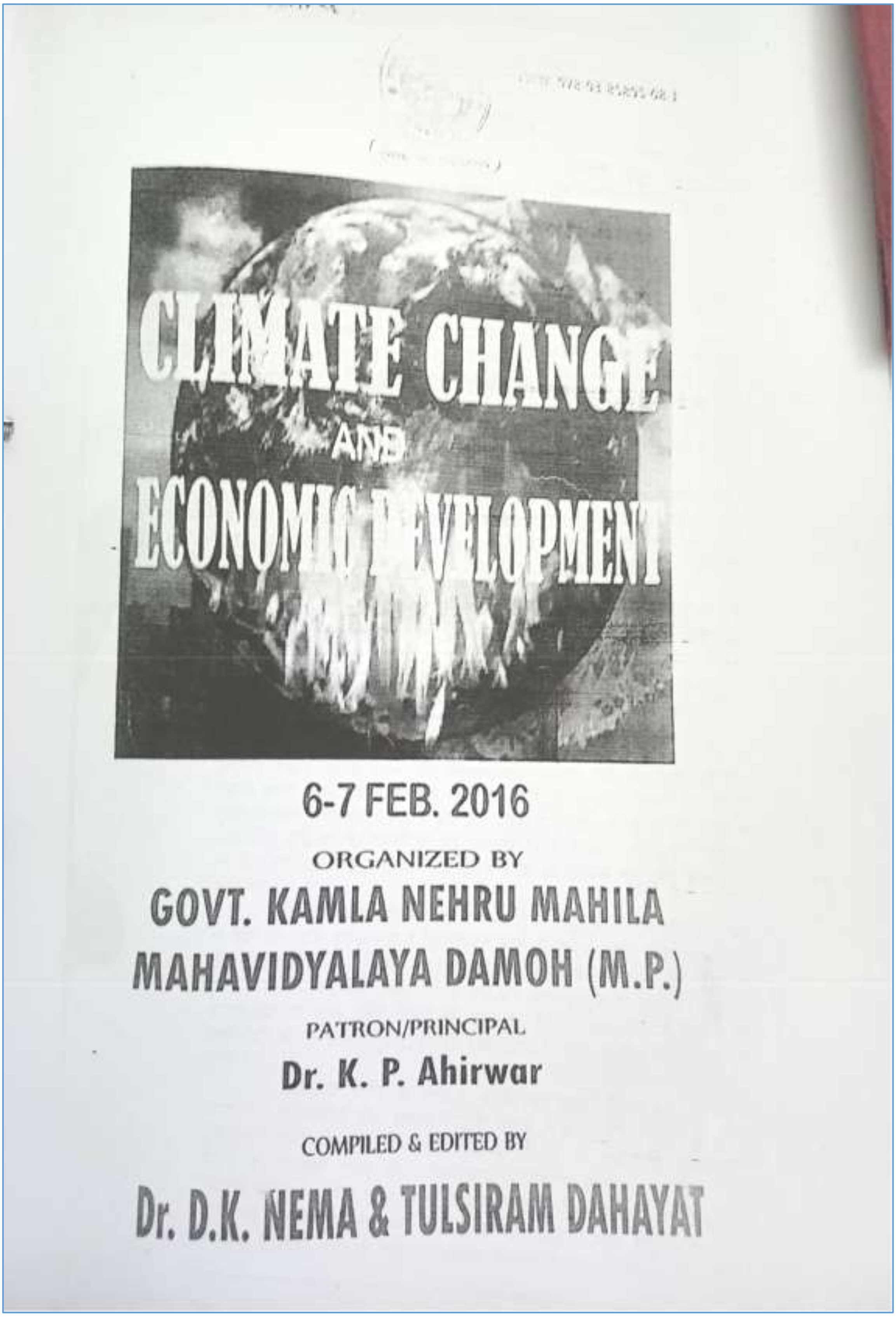
CLIMATE CHANGE AND ECONOMIC DEVELOPMENT

6-7 FEB. 2016

ORGANIZED BY

GOVT. KAMLA NEHRU MAHILA MAHAVIDYALAYA DAMOH (M.P.)

PATRON/PRINCIPAL

Dr. K. P. Ahirwar

COMPILED & EDITED BY

Dr. D.K. NEMA & TULSIRAM DAHAYAT

Cont………

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी "जलवायु परिवर्तन एवं [illegible]"

आपदा और जलवायु

डॉ. [illegible]
[illegible]
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय [illegible]

[illegible] के अनुसार पृथ्वी का तापमान बढ़ने से [illegible] 50 से 80 प्रतिशत [illegible] 1980 से अब तक 29 वर्षों में [illegible] 25 वर्षों में [illegible]

[illegible] 2000 [illegible] वर्ष 2000 [illegible] 140 वर्षों [illegible] 1961 से वर्ष 1990 [illegible] 140 वर्षों [illegible]

[illegible] 21 [illegible] 22 जनवरी 2001 [illegible] वर्ष 1990 [illegible]

[illegible] सन 2000 [illegible] 35 वर्षों में [illegible] 40 प्रतिशत [illegible]

रिपोर्ट में सबसे चौंकाने वाली बात यह है – समुद्र के किनारे बसे हुए [illegible] 3300 क्यूबेक किलोमीटर [illegible]

इकोलॉजी रिपोर्ट के अनुसार एशिया पर खतरा पिछले वर्ष से ज्यादा है। [illegible] में लू से सर्वाधिक मौतें, इण्डोनेशिया के जंगलों में आग, चीन में बाढ़ की [illegible] और मलेरिया में [illegible] और रबर की फसल की तबाही से [illegible] है। पर्यावरण संकट की समस्या आज अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है [illegible] पर्यावरण संकट पर विचार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। प्राकृतिक कारणों द्वारा [illegible] कई घटनाएं जब पर्यावरण तथा मानव पर विपरीत प्रभाव डालती है तो [illegible] प्राकृतिक आपदाएं, पर्यावरण प्रकोप, पर्यावरण आघात, पर्यावरण [illegible]

Cont………

संबोधित किया जाता है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण सड़कों की बर्बादी, विद्युत खंभों का मुड़ना या उखाड़ना, भूमि का कटाव, मकानों का नष्ट होना, संचार सेवाओं का अस्त व्यस्त हो जाना और यातायात का ठप्प हो जाने से जन जीवन अस्त व्यस्त हो जाते है।

आपदाओं के प्रकार –

मनुष्यकृत आपदायें – वे आपदायें है जिन्हें मनुष्य ने अपनी विकासजन्य आवश्यकताओं और प्रौधोगिकी के विकास के कारण जन्म दिया।

अ. परमाणु बम विस्फोट – द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर 6 और 9 अगस्त 1945 को फेंके गये परमाणु बम मानव इतिहास में सर्वाधिक दुखद आपदायें थी।

ब. स्मोग – स्मोग शब्द सर्वप्रथम 1905 में प्रयुक्त हुआ। खुली हवा में गैसों के प्रदूषण की मात्रा अत्यधिक हो जाती है तो वह जीवन के लिये घातक बन जाता है सर्वप्रथम "स्मोग ओंफ दा पिसानर" 1930 मे बैल्जियम में मियूजघाटी मे घटी । इन घाटी मे 5 दिन तक स्मोग छाया रहा। पर्यावरण से 63 व्यक्ति मारे गये।

स. भोपाल गैस त्रासदी– भोपाल गैस त्रासदी 2 व 3 दिसम्बर 1984 को रात्रि मे घटी। एक भयानक मनुष्यकृत आपदा थी जिससे लगभग 2 लाख व्यक्ति प्रभावित हुये।

द. चेरोनोबिल परमाणु दुर्घटना – रूस में 28 अप्रैल 1986 को चेरोनोबिल परमाणु संयत्र में घटी यह दुर्घटना मनुश्यकृत आपदाओं का एक अन्य उदाहरण है परमाणु संयत्र मे हुये विस्फोट से आसपास के 120 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में रेडियोधर्मी तत्व फैल गये।

प्राकृतिक आपदायें – प्रकृति द्वारा समय – समय पर ऐसी अनेक आपदायें उत्पन्न की जाती है जिनका पूर्वानुमान लगाना कठिन है इनमे प्रमुख –

अ. समुद्री तूफान– समुद्री तूफान प्रकृति की एक घातक आपदा है। अटलांटिक क्षेत्र मे समुद्री तूफान को हरीकेन तथा प्रशान्त क्षेत्र में टाइफून कहा जाता है। समुद्री तूफान प्राय समुद्र से लगने वाले तटीय क्षेत्रों में अक्सर आते है जो धन हानि की दृष्टि से बड़े विनाशक होते है।

समुद्री तूफान प्रायः 70–75 मील प्रति घंटे की तेज रफ्तार से चलते है इनसे तीन प्रकार का नुकसान होता है।

– तेज हवाओं से होने वाली हानियां।

– भारी वर्षा से उत्पन्न होने वाली हानियां ।

– ऊंची लहरों से होने वाली क्षति।

ब. बाढ – बाढ का सामान्य अर्थ होता है विस्तृत स्थलीय भाग का कई दिनों तक जलमग्न रहना। वास्तव में बाढ प्राकृतिक पर्यावरण का गुण है तथा अपवाह बेसिन के जलीय चक्र का एक घटक है बाढ़ एक प्राकृतिक घटना है।

पृथ्वी के अन्दर चट्टानों के अचानक खिसकने से टूटने या स्थानांतरित होने से भूकम्प आते है। पृथ्वी के अंदर जिस स्थान पर ये चट्टाने टूटती है उन्हें सिसमिक केन्द्र कहते है। भूकम्प जन धन हानि को व्यापक बना देते है। भूकम्प और ज्वालामुखी पृथ्वी की सामान्य प्रकियायें है लेकिन जब ये घटनायें मानव बाहुल्य क्षेत्र में घटती है तो बड़ा विनाश करती है हजारों वर्षों से मनुष्य इन आपदाओं को देखता आ रहा है। ज्वालामुखी के फटने से राख धूल के साथ बडी मात्रा में विषाक्त गैसें भी निकलती है। ज्वालामुखी का उदगार इतना अचानक एवं प्रचण्ड होता है कि लोगों को अन्य स्थान पर जाने का समय नहीं मिल पाता है। जब बाढ़, सूखे, कीट या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न स्थितियों में भोजन और खाद्यानों की अत्यधिक कमी हो जाती है तो अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अकाल की स्थिति में बढी संख्या में जनहानि, सामाजिक आर्थिक जीवन में दुर्दावस्था और भुखमरी उत्पन्न हो जाती है। अकाल से अपार जन धन की हानि होती है। प्राकृतिक और मनुष्य कृत अपदाओं में आग एक विनाशक आपदा है। आग प्रायः वनों खेतो खलियानो के अलावा उँची बडी इमारतो, बाजारो और दुकानो मे लगती है। प्राकृतिक वन सम्पदा का नुकसान होता है। भूकम्प के प्रभाव से ज्वालामुखी के उदगार को कभी भूमि सरकती है जब कभी भूमि पृथ्वी की बाह्य शक्तियों द्वारा भू व पृथ्वी का कोई भाग सरकता है तो वह भू सरकन कहलायेगा।

Cont………

आपदाओं के कारण –

1. प्राकृतिक कारक – प्रकृति मे परिवर्तन सतत रूप से चलते रहते है। आज वि[illegible] भर मे जलवायु परिवर्तनों को महसूस किया जा रहा है आकस्मिक और अप्रत्याशि[illegible] रूप से वर्शा बाढ एवं सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं के पीछे जलवायुगत कारक है जिनका संबंध प्राकृतिक कारणो से है। जब जलवायु अचानक बदलती है [illegible] जीवधारी उसके अनुरूप अनुकूलन नहीं कर पाते और प्राणियो के समुदाय नष्ट हो जाते है।
2. मनुष्यकृत कारण – प्राकृतिक आपदाओं के योगदान मे मनुश्यकृत कारको को अनदेखा नहीं किया जा सकता। वन विनाश, नकदी फसलो के लिये उपवनो को खेतों मे बदलना, सड़कों का अंघधुंध विस्तार बड़े बाँधों का निर्माण आदि एक कारण है जो अनेक प्रकार की प्राकृतिक और मनुश्यकृत आपदाओं का मार्ग प्रशस्त करते है।

आपदा प्रबन्धन की रणनीति –

मौसम एवं सूचना प्रसारण विभाग सहित अन्य विभागों का प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान होता है राशट्रीय स्तर पर निम्न उपाय अपेक्षित है–

- सूखा, बाढ, तूफान, चक्रवात एवं भूकम्प आदि की स्थिति में निगरानी।
- इनसेट उपग्रहों की मदद से देश के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों में चक्रवातों का पता लगाने और उनकी भविश्यवाणी करने वाले नेटवर्क को सुदृढ करना।
- प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों के सामाजिक और आर्थिक पुर्नवास हेतु अंर्तराश्टीय संगठनों जैसे विश्व बैंक रेडकास सोसायटी आदि से सहायता प्राप्त करना।
- शिक्षा प्रशिक्षण अनुसंधान तथा प्रलेखन कार्यकमों को प्रोन्नत करने के उद्देश्य से संस्थागत प्रबंध करना।
- आपदा प्रबंध कार्यकमों से संबंधित प्रशिक्षणों में स्वैछिक तथा गैर सरकारी संगठनों को शामिल करना।

प्राकृतिक आपदाओं के निवारण तथा बर्बादी को रोकने के उद्देश्य से किसी प्रबंध कार्य के लिये वित्तीय सहायता पर्याप्त नहीं होती इसके लिये सरकार के प्रयास के अलावा स्थानीय स्तर पर सामुदायिक सहयोग हेतु लोगों को अभिप्रेरित करना बहुत आवश्यक है।

आपदा पूर्व और आपदा के समय प्रबन्धन उपाय – इसके निम्न उपाय है–

1. भूकम्प के समय बाहर भागकर लोगों को अपने घर के अंदर किसी सुरक्षित स्थान पर खड़े होना चाहिये।
2. भूकम्प के समय घर में जल रही आग या हीटर को बंद कर देना चाहिये।
3. पानी से भरे बर्तनों को अपातकाल के लिये सुरक्षित रखना चाहिये।
4. सूखा, बाढ, तूफान एवं भूकम्प आदि की निगरानी और पूर्वानुमान के लिये दूरसंवेदी प्रौद्योगिकी को लागू करना।
5. प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों के सामाजिक आर्थिक पुर्नवास हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे विश्वबैंक, रेडकास सोसायटी से सहायता प्राप्त करना।
6. आपदाओ के प्रबंधन के लिये कार्य योजना तैयार करना।
7. सूचना यातायात और आवश्यक सेवाओं को बहाल करने मे तत्परता।
8. स्थानीय लोगों द्वारा व्यवस्था और अनुशासन बनाने में सहायता प्रदान करना।
9. विभिन्न सेवाओं और सामग्री के वितरण में सहयोग करना।
10. विभिन्न प्रकार की बचाव और राहत कार्यों में सकिय रूप से भाग लेना।
11. महानगरों की विकास योजनायें तैयार करते समय प्राकृतिक आपदा प्रवण क्षेत्र के नक्शों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिये।

Cont……..

उपर्युक्त अध्ययन के अनुसार, पृथ्वी का तापमान बढ़ने और प्राकृतिक असन्तुलन के कारण विशाल हिमखण्ड पिघल जायेंगे और सागर तल में लगभग 100 मीटर की वृद्धि हो जायेगी। ऐसी स्थिति में भू – पटल पर भयंकर विनाश। तथा उथल – पुथल होने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन बढ़ता गया तो मानव समाज उपरोक्त सम्भावित स्थिति इस पृथ्वी पर सन् 2100 तक ले आयेगा।

1. ग्रीन हाउस जन्य जलवायु परिवर्तन से पृथ्वी के कुछ भागों पर भयंकर सूखा पड़ेगा, तो अन्य भू भागों पर भयंकर बाढ़ें आयेंगी। दोनों ही स्थितियों में अकाल तथा महामारी जैसे से धूल भरी आँधियों, वनों का विनाश तथा वनों में आग लगने की घटनायें बढ़ेंगी, साथ ही कई नगर व ग्रामीण क्षेत्र अधिक गर्म हो जाने के कारण मानव निवास के योग्य नहीं रहेंगे।
2. पृथ्वी के औसत तापमानों में जैसे – जैसे वृद्धि होती जायेगी, वाष्पीकरण क्रिया तीव्र होते जाने से भू पटल से पीने के पानी की मात्रा में कम। कमी आती जायेगी। मानवीय जीवन के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल की मात्रा में कमी होने से मानव जाती का अस्तित्व ही संकट में पड़ जायेगा।
3. पृथ्वी के औसत तापमानों में वृद्धि होने के फलस्वरूप उत्पन्न मौसमीय बदलाव का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ेगा। पृथ्वी पर वर्तमान में महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र रेगिस्तानी भागों में परिवर्तित हो जायेंगे।
4. ग्रीन हाउस प्रभावों से मानव के शरीर में अनेक शारीरिक विकार उत्पन्न होंगे।
5. ऑस्ट्रेलिया के इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर एप्लाइड सिस्टम एनालाइसिस के डिप्टी डायरेक्टर ब्रो दूस के अनुसार, ग्रीन हाउस प्रभाव को रोकने के लिये जब तक कुछ नहीं किया जाता, सन् 1990 से सन् 2020 तक प्रतिदिन लगभग 50 पादप व जन्तु प्रजातियाँ विलुप्त होती रहेंगी।

दिन – प्रतिदिन दुनिया भर के तापमान में वृद्धि होने के कारण अन्टार्कटिका के जीवों पर खतरे का बादल मंडरा रहा है। अगर तापमान में इसी तरह वृद्धि होती रही, तो बहुत से समुद्री जीव अगली शताब्दी तक विलुप्त हो जायेंगे। इनमें सी स्पाइडर और अन्टार्कटिका किल भी शामिल है।

सदर्भ ग्रंथ सूची –

1. डॉ. वर्मा जी. एस., पर्यावरण शिक्षा, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ, 2005 पृ. 17।
2. डॉ. शर्मा आर. ए., पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2004 पृ. 3।
3. पर्यावरण, सचार एवं प्रबंधन, पृ. 206।
4. डॉ. वर्मा जी. एस., डॉ. सविता कुमारी पर्यावरणीय शिक्षा इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2005 पृ. 91, 67।
5. पर्यावरण, सचार एवं प्रबंधन, पृ. 195 – 203।
6. डॉ. वर्मा जी. एस., डॉ. सविता कुमारी पर्यावरणीय शिक्षा आर. लाल बुक डिपो मेरठ, 2004 पृ. 81।
7. पर्यावरण, सचार एवं प्रबंधन, पृ. 192।
8. मित्र टीना "प्राकृतिक आपदायें और विकास", दैनिक आचरण सागर, म.प्र., 1998 पृ. 25।

SERIAL NO. - 13: Book Chapter: Shri Ankit Kumar Mahirshi Dayanand krit Bhashye Niruktprabha (2018).

१२

महर्षिदयानन्दकृतभाष्ये निरुक्तप्रभावः

अङ्कितकुमारः*

[illegible] दृष्टिनिक्षिप्ते चेदेका महती परम्परा नो दृष्टिपथमुपयाति। [illegible] भाष्याणि व्यरचन्। तत्र प्राचीना आचार्या यास्कपतञ्जल्या- [illegible] वैदिकसंस्कृतनियमैरेव कुर्वन्ति, किन्तु मध्यकाले कैश्चिदाचार्यैर्वेद- [illegible] वैदिकसंस्कृतनियमान् उपेक्ष्य लौकिकसंस्कृतनियमैरेव तद्भाष्यं [illegible] नियमान् उल्लङ्घ्यत्विवाभाति। सायणान्ते [illegible] दृश्यते। कैश्चित्तु भाष्यकारैर्वेदभाष्य- [illegible]। एते भाष्यकारा वेदाध्यापकान् निरुक्त- [illegible] शासनेन वा प्रभाविता भाष्यं व्यरचन्। [illegible] एव वेदार्थकरणे प्रामाणिकत्वेन [illegible]। ततः पूर्वमाचार्यशङ्करमतिरिच्य कस्यचिदपि सायण- [illegible]। स्वामिदयानन्दस्य त्वेषा दृढा धारणासीद् [illegible] यदा ते मध्यकालीनानां पण्डितानामन्य- [illegible]। एतत् साहसिककार्यन्तेनैव महात्मना समपादि, [illegible]। द्विसहस्रवर्षान्तरन्तेनैव [illegible] नामानि परमात्मन एव वर्तन्ते। [illegible], वेदान् अवगन्तुं सायणमहीधरञ्च मार्गदर्शकत्वेन [illegible] निरुक्तनिघण्टुब्राह्मणोपनिषद एव [illegible] वैदिकसाहित्यसमागतानां शब्दानामनुप्रसङ्गमर्थः [illegible]। यद्यपि [illegible], किन्तु कस्यचिदपि तस्मिन् भाष्ये दोषान्वेषणस्य [illegible] वर्तते। प्रकृते च [illegible] विवेच्यो विषयः।

---

*[illegible]

[illegible]

महर्षिदयानन्दभाष्ये निरुक्तस्य कः प्रभाव इति ज्ञानात्प्राक् निरुक्तं किमिति राजशेखरः काव्यमीमांसाया द्वितीयेऽध्यायेऽस्य निर्वचनङ्करोति निर्वचनान्निरुक्तमिति। अथ च निरुक्तं वेदपुरुषस्य श्रोत्रमिति चोच्यते। अस्य च पञ्चविधत्वमुच्यते विज्ञैः। तदाहुः-

"वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधन्निरुक्तम्॥" (निरुक्तम्)

१. **वर्णागमः** - कश्चिद् भिन्नो वर्ण आनीयते, **"मित्रवदागमा भवन्ति"** इति। यथा हंस इति नस्य वर्णस्यागमः।
२. **वर्णविपर्ययः** - वर्णयोर्विपर्ययो भवति। यथा सिंह इति हिंसिधातोर्वर्णविपर्यये सति सिद्ध्यति।
३. **वर्णविकारः** - वर्णस्य लोपो भवति। यथा 'राजा' इत्यत्र 'राजन्' शब्दे नस्य "आ" इति विकारो भवति।
४. **वर्णनाशः** - वर्णस्य नाश एव भवति। यथा 'त्वा' इत्यत्र 'त्वाम्' इति शब्दे मकारनाशः।
५. **धातोस्तदर्थातिशयेन योगः** - धातोर्धात्वर्थातिशयेन योगः क्रियते, यथा मह्यां रौतीति मयूर इत्यत्र रौतेः रमणं करोतीति धात्वर्थातिशयेन योगो भवति।

महर्षिदयानन्दस्य निर्वचनानाम्प्रकारस्सर्वथा यास्कप्रभावितो दृश्यते। यास्कस्य महर्षिदयानन्दभाष्ये प्रभावमवलोकयितुन्निर्वचनानां प्रकारा अवश्यतया द्रष्टव्या एव। अत्र पूर्वं यास्कः किमिव शब्दान्निर्वचनानि करोतीत्येतत् सन्दर्शयति।

- तद्येषु पदेषु स्वरसंस्कारौ (स्वरः शब्दाकृतिश्च) समर्थौ प्रादेशिकेन गुणेन (विकारेण) अन्वितौ स्याताम्, तथा तानि निर्ब्रूयात्।
- अनन्वितेऽर्थेऽप्रादेशिके विकारेऽर्थनित्यः परीक्षेत केनचिद् वृत्तिसामान्येन।
- अविद्यमाने सामान्येऽप्यक्षरवर्णसामान्यान्निर्ब्रूयात्।
- न त्वेव न निर्ब्रूयात्।
- न संस्कारमाद्रियेत। विषयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति।
- यथार्थं विभक्तीः सन्नमयेत्।
- प्रत्तम्, अवत्तम्, इति धात्वादी एव शिष्येते।
- अस्तेर्निवृत्तिस्थानेष्वादिलोपो भवति। स्तः, सन्तीति।
- अथापि अन्तलोपो भवति। गत्वा, गतमिति।
- अथापि उपधालोपो भवति। जग्मतुः, जग्मुरिति।
- अथापि उपधाविकारो भवति। राजा, दण्डीति।

SERIAL NO. - 14: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Rajasva Vradhhi ka Rambaan Upaay G.S.T. PN: 37-47(2018

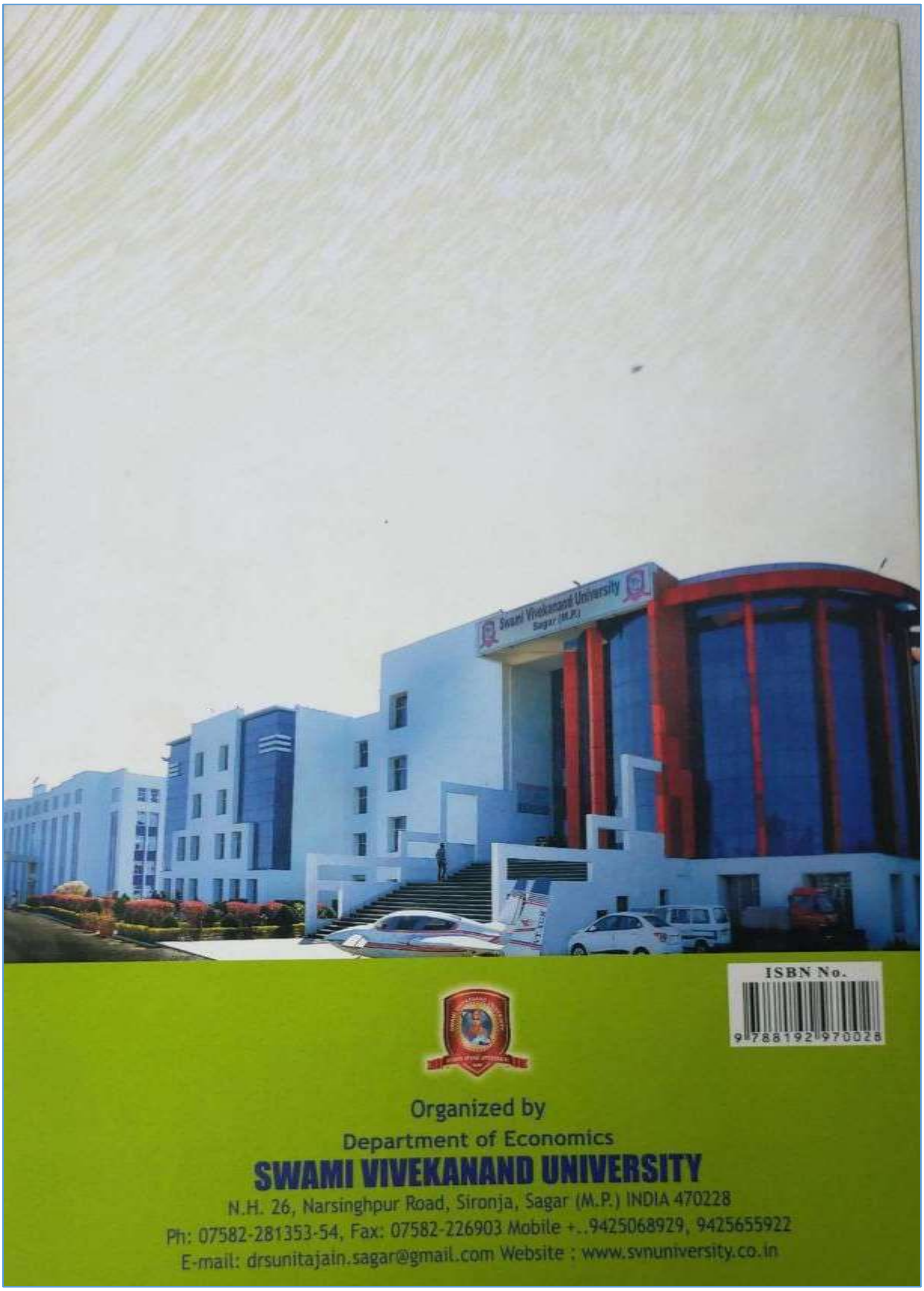

Cont………

GST
Opportunities And Challenges
वस्तु एवं सेवा कर संभावनाए एवं चुनौतियाँ

Editor :

Prof. Sunita Jain

Co-Editor :

Prof. Neeraj Topkhane

SVN PUBLISHING HOUSE

Book Version-978-81-929700-2-8

Cont…….

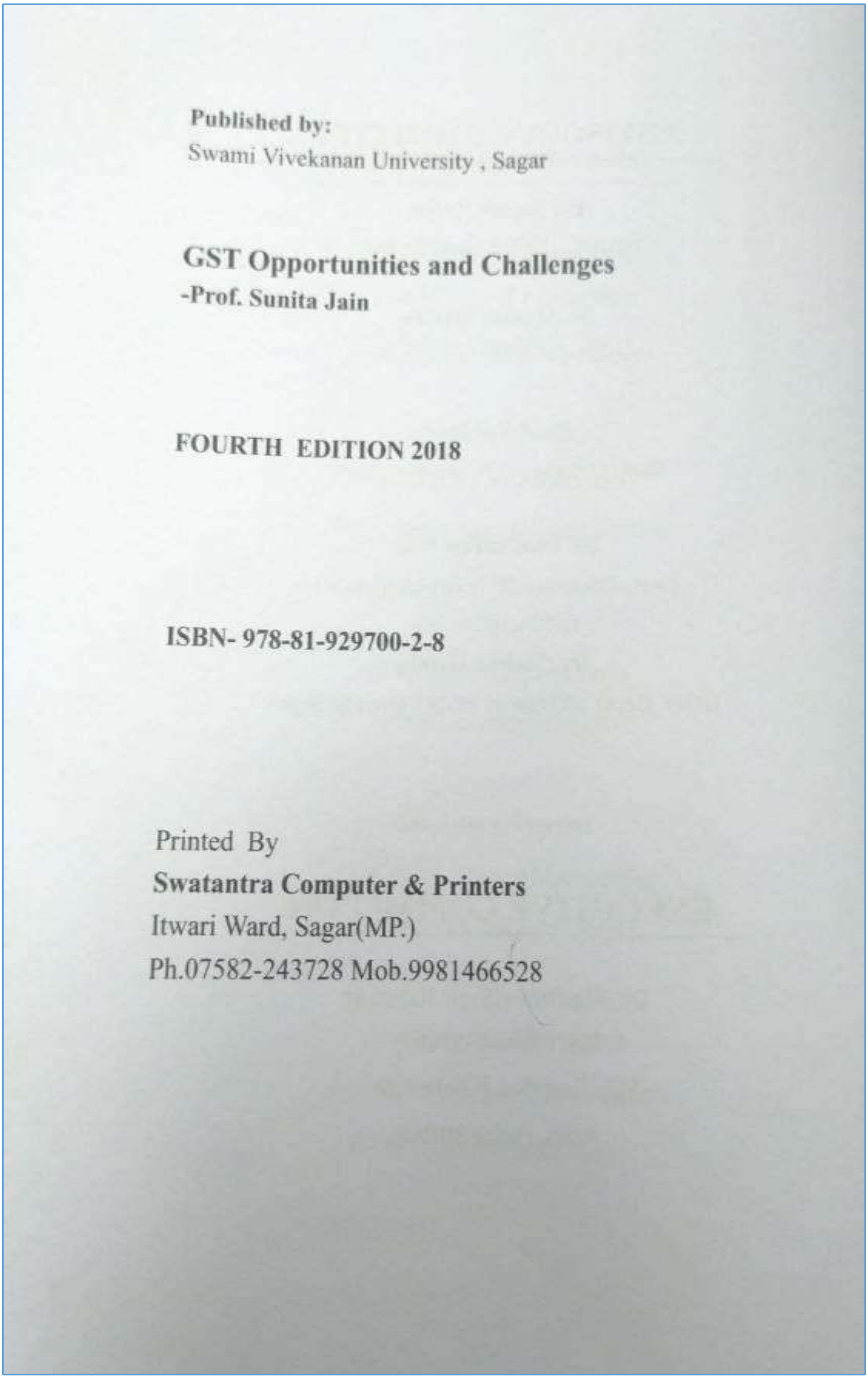

Published by:
Swami Vivekanan University , Sagar

GST Opportunities and Challenges
-Prof. Sunita Jain

FOURTH EDITION 2018

ISBN- 978-81-929700-2-8

Printed By
Swatantra Computer & Printers
Itwari Ward, Sagar(MP.)
Ph.07582-243728 Mob.9981466528

Cont……

CONTENTS

1. जी.एस.टी. : कितना लाभकर 1
– डॉ. शोभा जैन
– डॉ. अशोक गर्ग
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में जी.एस.टी. की उपयोगिता एवं प्रभाव 6
– डॉ. सुनीता जैन
– डॉ. गिरीश मोहन दुबे
3. जीएसटी – भारतीय अर्थव्यवस्था में एक आर्थिक सुधार 17
– डॉ. श्रीमती शक्ति जैन
4. जी.एस.टी. की अवधारणा एवं विशेषताएं 26
– डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव
5. भारत में वित्तीय क्षेत्र में नवाचार एवं उसके प्रभाव (जी.एस.टी. के विर्शेष संदर्भ में) 33
– डॉ. सविता जैन
6. राजस्व वृद्धि का रामबाण उपाय जी.एस.टी. 37
– डॉ. असलम खॉन
7. वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.): प्रभाव (विश्लेषात्मक अध्ययन) 44
– डॉ. डी. एन. नामदेव
– डॉ. अमित कुमार तिवारी
8. जीएसटी : एक सकारात्मक बदलाव 49
– डॉ. खुदैजा परवीन अंसारी
9. भारतीय अर्थव्यवस्था के परिदृश्य में वस्तु एवं सेवा कर 56
– डॉ. वीरेन्द्र सिंह मटसेनियां
– डॉ. हरिनारायण विश्वकर्मा
10. भारतीय बीमा क्षेत्र में जीएसटी का प्रभाव 63
– अनुराधा चौरसिया
11. संगठित क्षेत्र की उद्यमी महिलाओं पर जीएसटी का प्रभाव 72
– कु. सुजाता परी अहिरवार
12. GST: One Nation & One Tax 77
- Prof. Dr. Narendra Kumar Thapak
- Mr. Nishant Dubey
13. Basic Concepts And Features Of Goods And Services Tax In India (GST) 85
- Dr. Harsh Singh
14. Goods and Services Tax in India 92
- Dr. Rupali Saini

Cont………

राजस्व वृद्धि का रामबाण उपाय जी.एस.टी.

डॉ. असलम खॉन

GST को राजस्व वृद्धि का कुबेर कहना हमारी अतिश्योक्ति नहीं है। वास्तव में लगभग 25 वर्षों के पड़ाव को पार करती हुई कर नियमावली 1 जुलाई 2017 को एक आर्थिक क्रांति के रूप में हमारी अर्थव्यवस्था के समक्ष आयी। जिसने लगभग 17 तरह के कर और 23 तरह सेस को एक ही प्लेटफार्म पर लाकर आम नागरिकों को कर प्रणालियों से होन वाली परेशानियों से बचाया है। इस क्रांति के आगमन ने कर व्यवस्था में राजस्व वृद्धि की संभावना को और अधिक बढ़ाया है। इसलिये इसको कुबेर की संज्ञा देना लाज़मी समझा गया है।

GST अर्थात **Goods and Service Tax** या वस्तु एवं सेवाकर एक एकीकृत अप्रत्यक्ष कर प्रणाली है। जिसमें केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा वस्तु एवं सेवाओं पर विभिन्न चरणों में लगाये जाने वाले करों को समाप्त कर एक कर लगने की व्यवस्था की गई है।

GST कर क्रांति का सफर लम्बा है। इसको लागू करने में विभिन्न समितियों के सुझावों, इस्तीफा, संसदीय कार्यप्रणाली, विधेयकों ने लगभग 1993 से अपना सफर शुरू किया। 1993 में कर विशेषज्ञ **राजा जे.चलैया** ने केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के अध्ययन का सुझाव दिया एवं राष्ट्रीय लोकवित्त एवं नीति संस्थान के तात्कालीन निदेशक अमरेश बागची को संभावित GST संहिता के अध्ययन की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके 6 वर्ष बाद सन् 1999 में राज्यस्तरीय वेट पर पश्चिम बंगाल के तात्कालीन वित्त मंत्री **असीम दास गुप्ता** की अध्यक्षता में वित्तमंत्रियों की एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति का गठन हुआ तदोपरांत अगले वर्ष 2000 में राज्य के वित्तमंत्रियों की एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति का गठन हुआ। इस कर क्रांति के अगले चरण में वर्ष 2004 में सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अंतर्गत एक समिति पंजीकृत हुई, **असीम दास गुप्ता** इस समिति के नये चेयरमेन बने। अगले वर्ष सन् 2005 में प्रस्ताव के आधार पर तत्कालीन केन्द्रीय वित्तमंत्री **पी. चिदम्बरम** ने राज्यस्तरीय वेट पर श्वेत पत्र जारी किया इस आधार पर ज्यादातर राज्यों ने वेट कानून लागू किये लेकिन शुरू में उ.प्र. व ओडिशा इस व्यवस्था में शामिल नहीं हुये। फरवरी 2006 में तत्कालीन वित्तमंत्री **पी.चिदम्बरम** ने बजट भाषण में GST का प्रस्ताव दिया, इसकी समय सीमा 1 अप्रैल 2010 रखी गई। इसी पर विचार करते हुये फरवरी 2007 में **पी. चिदम्बरम** ने कहा कि GST लागू करने के लिये विशषाधिकार प्राप्त समिति केन्द्र के साथ मिलकर कार्य करेगी। मई 2007 में वित्तमंत्री के तत्कालीन सलाहकार **पार्थ सारथी शोम** की अध्यक्षता में एक संयुक्त कार्य समूह का गठन हुआ और राज्यों के वित्तमंत्रिओं के अधिकार

ISBN - 978-81-929700-2-8

SERIAL NO. - 15: Book Chapter: **Smt. Jaya Ahirwar Asst. Prof. Gareebi aur Arthik Vikaas (2018).**

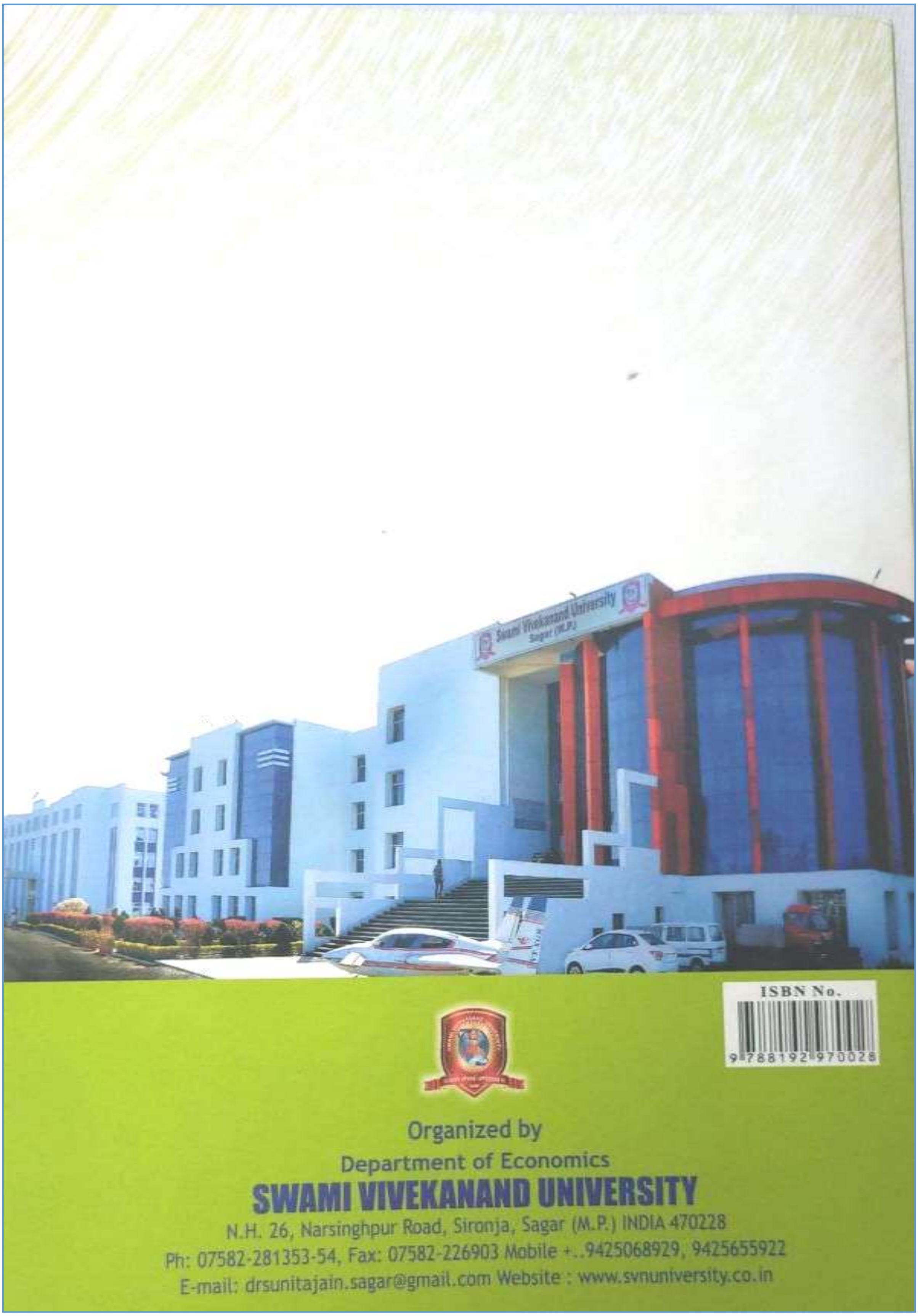

Cont……..

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1	भारतीय आर्थिक विकास मे डॉ. अंबेडकर की भूमिका	डॉ.के.पी.अहिरवार	
2	Indian economics growth in dollars; Strategies, radical remedies of golden crown jewel Medical tourism ?	Dr. S. K. Bhatnagar, Director	16
3	IMPACT OF COST OF CULTIVATION ON FORMERS INCOME (Special Reference to Damoh District)	Dr.Tulsiram Dahayat Dr.Keshav Tekam	19
4	IMPLEMENTATION OF GOOD AND SERVICE TAX IN INDIA: PROSPECTS AND CHALLENGESDr. Vinod Sen. Dr. Anand Sugandhe	Dr. Vinod Sen. Dr. Anand Sugandhe	26
5	TREND OF URBANIZATION AND CHALLENGES IN BHOPAL	Dr Kusum Mathur &Seema Yadav,	31
6	Impact of fiscal sector reforms on Small Scale Industries	*Dr. Pooja Chaturvedi Dr. Anju Loomba Prof. (Dr.) N.C. Jain	38
7	"A Study of Working capital analysis of industry in M.P. with special reference to HEG Ltd Mandideep"	Dr. Preeti Shrivastava, Dr. Prof. N.C. Jain	43
8	Rural Electrification And Agriculture in Damoh District	Dr. Ramesh Athiya	48
9	A Socio Legal Study of Farmer's Interest Transition to Legal Rights	Mr. Shailendra Pachori	56
10	Challenges in Agriculture development for the Indian economy	Dr. BASANTI MATHEW MERLIN	61
11	RURAL TOURISM AND SUSTAINABLE LIVELIHOOD	Poonam Mishra	66
12	Demonetization and its Impact on Indian Society	Dr. Mamta Awasthy	71
13	IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON THE INDIAN ECONOMY	Ramesh Prasad Aharwal	77
14	Study of Electric Energy Management for a Machine System	P.L. Jain and Santosh Kumar Jain	80
15	मुद्रारहित लेनदेन : भारतीय अर्थव्यवस्था की बड़ी चुनौती	डॉ. हरिनारायण विश्वकर्मा	83
16	जुन्नारदेव में कृषि विकास की चुनौतियाँ	डॉ. कुसुम माथुर,नविता राजुरकर	86
17	पावरलूम उद्योग में श्रम कल्याण की आवश्यकता	श्री राजेश काले	90
18	भारतीय औद्योगीकरण के क्षेत्र में महिला उद्यमी की भूमिका	देवी सिंह ठाकुर	95
19	मध्यप्रदेश में सोयाबीन फसल की उत्पादकता	प्रभाक्षी तिवारी	98
20	मध्यप्रदेश में गन्ने की आधुनिक खेती, आज की आवश्यकता एक अध्ययन	डॉ.विनोद काले	101
21	"भारत में विमुद्रीकरण एक अध्ययन"	डॉ० गजेन्द्र कुमार रावत,डॉ.अमित जैन	105
22	गरीबी और आर्थिक विकास	जया अहिरवाल	108
23	विमुद्रीकरण (कम नगद अर्थव्यवस्था की ओर कदम)	डॉ. कीर्ति शुक्ला, डॉ.ए.के.पाण्डेय,	112
24	"भारत में रोजगार नियोजन की संभावनाऐं"	डॉ. क़मर इज़हार	115
25	भारत में गरीबी व जनांकिकीय परिवर्तन	श्रीमती मीना तिवारी	120
26	"ग्रामीण गरीबी और उसके प्रभाव"	डॉ. नीता ठाकुर	123
27	परम्परागत जल स्रोत एवं संकट	मनोज कुमार वर्मा एवम् डॉ० प्रभाकर मिश्रा	127
28	'मध्यप्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का क्रियान्वयन, मूल्यांकन एवं प्रभाव'	डॉ. पूजा तिवारी	132
29	गरीबी : एक चुनौती		134
30	**भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज**	शाहीन परवीन (अतिथि विद्वान)	137
31	**बेरोजगारी एक विचारणीय मुद्दा**	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	140
32	वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ	**डॉ. अवधेश कुमार जैन एवं डॉ.डी.के.नेमा**	142
	वस्तु एवं सेवाकर (जी. एस. टी.)	*विद्यानन्द पाण्डेय डा० वी०पी० उनियाल	143

Cont…….

गरीबी और आर्थिक विकास

जया अहिरवाल
अर्थशास्त्र विभाग

वर्तमान में भारत तेजी से विकास कर रहा है, परन्तु अभी भी देश के लिए गरीबी एक चुनौती बनी हुई है। भारत में लगभग साढ़े पाँच दशक के आयोजन के बाद भी जनसंख्या का लगभग 30 प्रतिशत भाग गरीबी से ग्रस्त है और अभाव में जी रहा है। भारत में अनुमानतः विश्व की सारी गरीब आबादी का तीसरा हिस्सा रहता है, 2010 में विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 32.7: लोग रोजाना US + 1.25 (लगभग 60 रू. प्रतिदिन) की अंतर्राश्ट्रीय गरीबी की रेखा के नीचे रहते है और 68.7: लोग रोजाना की US + 2 के कम में गुजारा करते हैं!

भारत में गरीबी की बहस नई नहीं है आजादी के पहले और बाद में भी लगातार गरीबी बहस के केन्द्र में रही है। आरंभिक दौर में आजाद भारत की सरकारों ने गरीबी उन्मूलन को हमेशा ही अपने वरीयता वाले लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन "गरीबी हटाओ" जैसे नारों के बावजूद यह बदस्तूर जारी रही। 1957 में इंडियन लेबर कांफ्रेस में गरीबी को परिभाशित करने की कोशिश की गई उसमें शुरू से ही दो तरह के दृश्टिकोण में खराब रहा है। पहला समूह वह जो गरीबी की परिभाशा को इस तरह से निर्धारित करना चाहता था कि जिससे कि इस रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या कम दिखाई दें। इस सोच के तहत पेट भरा होना गरीब न होने के लिए पर्याप्त माना गया। इस कान्फ्रेस के बाद योजना आयोग ने एक बर्किंग ग्रुप बनाया था जिसने भारत के लिए आवश्यक कैलोरी उपभोग की अवधारणा पर आधारित गरीबी रेखा का प्रस्ताव किया। इस अवधारणा के अनुसार शहरों में 2100 कैलोरी तथा गाँवों में 2400 कैलोरी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन से कम उपभोग करने वालों को गरीब माना जाता है।[1]

संयुक्त राश्ट्र संघ ने आर्थिक विकास के सूचक के रूप में प्रतिव्यक्ति आय को स्वीकार किया है। आर्थिक विकास एक व्यक्तिनिश्ठ अवधारणा है इसलिए इसकी मात्रा का निर्धारण संभव नहीं हैं, फिर भी इसके मापन के संबंध में अनेक प्रयास किए गए है यह मापक किसी परिमाणात्मक चर के आधार पर नहीं बल्कि जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले अनेक चरों से बने सूचकांक के आधार पर विकास की माप करते हैं। यदि किसी देश की प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ–साथ जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो, निर्धनता एवं भुखमरी में कमी हो अथवा साक्षरता तथा जीवन की प्रत्याशा में वृद्धि हो तो ऐसी स्थिति में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का सूचक माना जा सकता है।[2]

अब यहाँ यह प्रश्न उठता है, कि आर्थिक विकास व गरीबी के मध्य किस प्रकार का सम्बंध पाया जाता है, सीधा या विपरीत। अर्थात् विकास की दर बढ़ने से गरीबी में वृद्धि होती है या इसके अनुपात में गिरावट होती है। जैसा कि हमें ज्ञात है पिछले 60 वर्शो की तुलना में भारत की आर्थिक स्थिति में बहुत से परिवर्तन हुए है इस काल में भारत एक पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था के कुचक्र से निकलकर विकासशील अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ है। इस समयावधि में भारत की प्रति व्यक्ति आय, उत्पादन, पूँजी निर्माण, रोजगार, आर्थिक व सामाजिक ऊपरी पूँजी में विस्तार, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि प्राप्त हुई है परन्तु क्या अर्थव्यवस्था के प्रगति करने से निर्धनता के अनुपात में कोई कमी हुई है अथवा नहीं।[3]

अतः यह जानना रूचिकर होगा कि कुल जनसंख्या में गरीब व्यक्ति की संख्या और प्रतिशत अनुपात में कितना परिवर्तन हुआ है। आँकड़ों से पता चलता है कि 1973–74 और 1987–88 के दौरान गरीबी का अनुपात जो 1973–74 में 54 प्रतिशत था कम होकर 1983 में 44.5 प्रतिशत हो गया, परन्तु गरीबों की कुल संख्या लगभग 32 करोड़ बनी रही 1993–94 में भी गरीबों की संख्या 32 करोड़ ही थी चूँकि 1987–88 और 1993–1994 के दौरान गरीबी में कमी की दर 1 प्रतिशत प्रति वर्श थीं। 1993–1994 और 1999–2000 के बीच गरीबी की दर में सबसे अधिक तेज गति से कमी हुई अर्थात 3.4 प्रतिशत प्रतिवर्श और गरीबों की संख्या कम होकर 26 करोड़ हो गयी। परन्तु अगले पाँच वर्शों में जबकि अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.5 प्रतिशत प्रति वर्श के उच्च स्तर पर पहुँच गयी, गरीबों की संख्या 26 करोड़ से कम होकर 25 करोड़ हो गई– केवल एक करोड़ कम। इससे जाहिर है कि गरीबी में कमी की दर धीमी हो गई जिससे विकास प्रेरित रणनीति जो उदारीकरण– वैश्वीकरण के काल में अपनाई गयी
थी कि प्रभाविता पर प्रश्नचिन्ह लग गया।[4]

भारत के गरीबी के मापक के रूप में आवश्यक कैलोरी उपभोग को अपनाया गया है जिसके अनुसार वह आदमी गरीब नहीं है, जो किसी तरह दो वक्त अपना भोजन जुटा सकें। यूनिसेफ स्वस्थ शरीर के लिए प्रोटीन, वसा, लवण, लौह और विटामिन जैसे अन्य तत्वों को जरूरी बताता है जिसके अभाव में मनुश्य कुपोशित रह जाता है, तथा उसकी बौद्धिक और शारीरिक क्षमताएं प्रभावित होती है, लेकिन गरीबी रेखा तो केवल जिंदा रहने के लिए आवश्यक भोजन से आगे नहीं बढ़ती। इसके अलावा यह व्यवस्था यह मानकर चलती है कि जनसंख्या के इस हिस्से का स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन, घर, स्वच्छ

SERIAL NO. - 16: Book Chapter: Dr. Mudita P. Shrivastav Bhoomandli karan ke Bhavar me Samkaleen Samaaj P.N. 140-14 (2018)

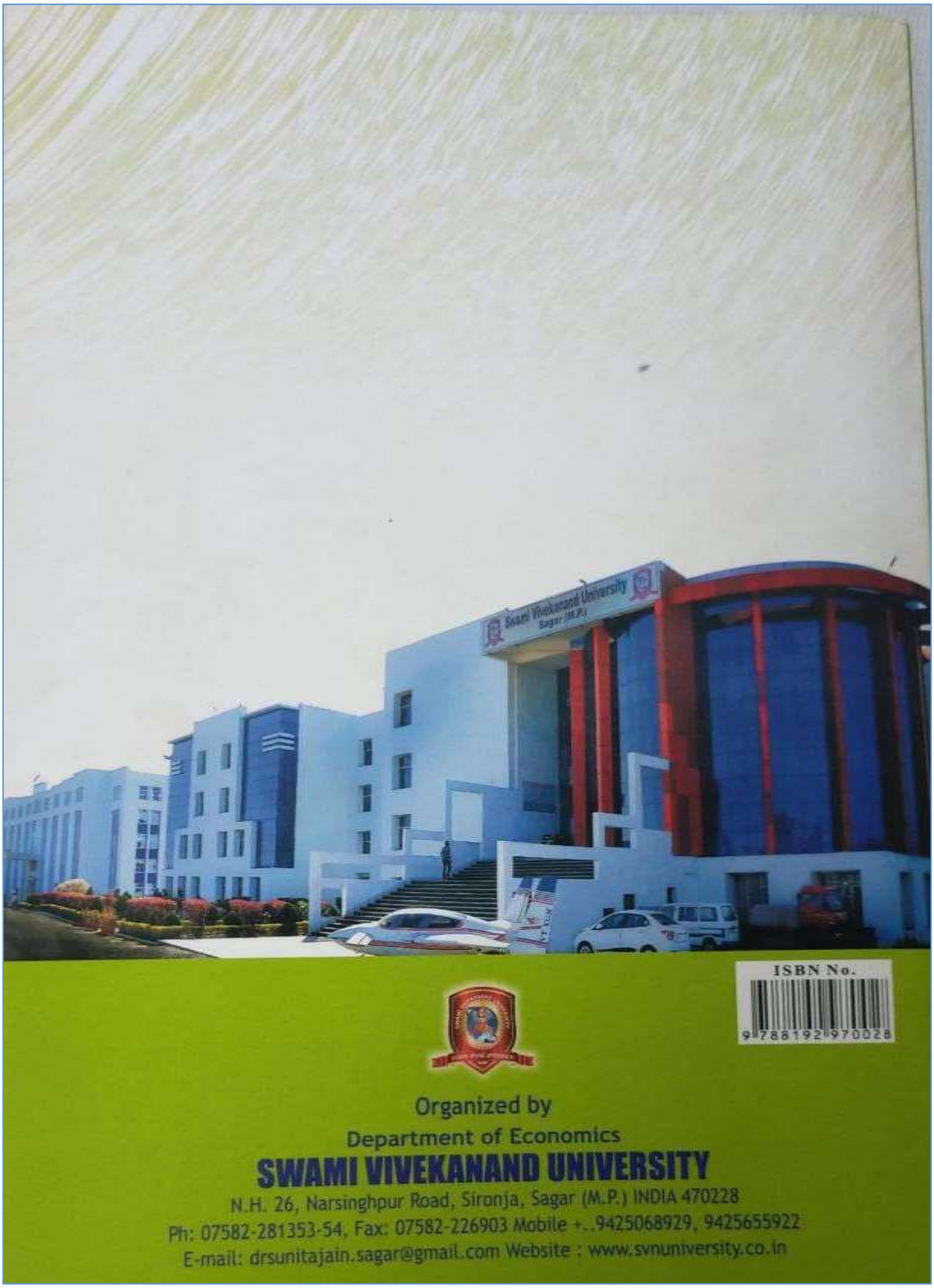

SERIAL NO. - 17: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Bhoomandli karan ke Bhavar me Samkaleen Samaaj P.N. 140-14 (201

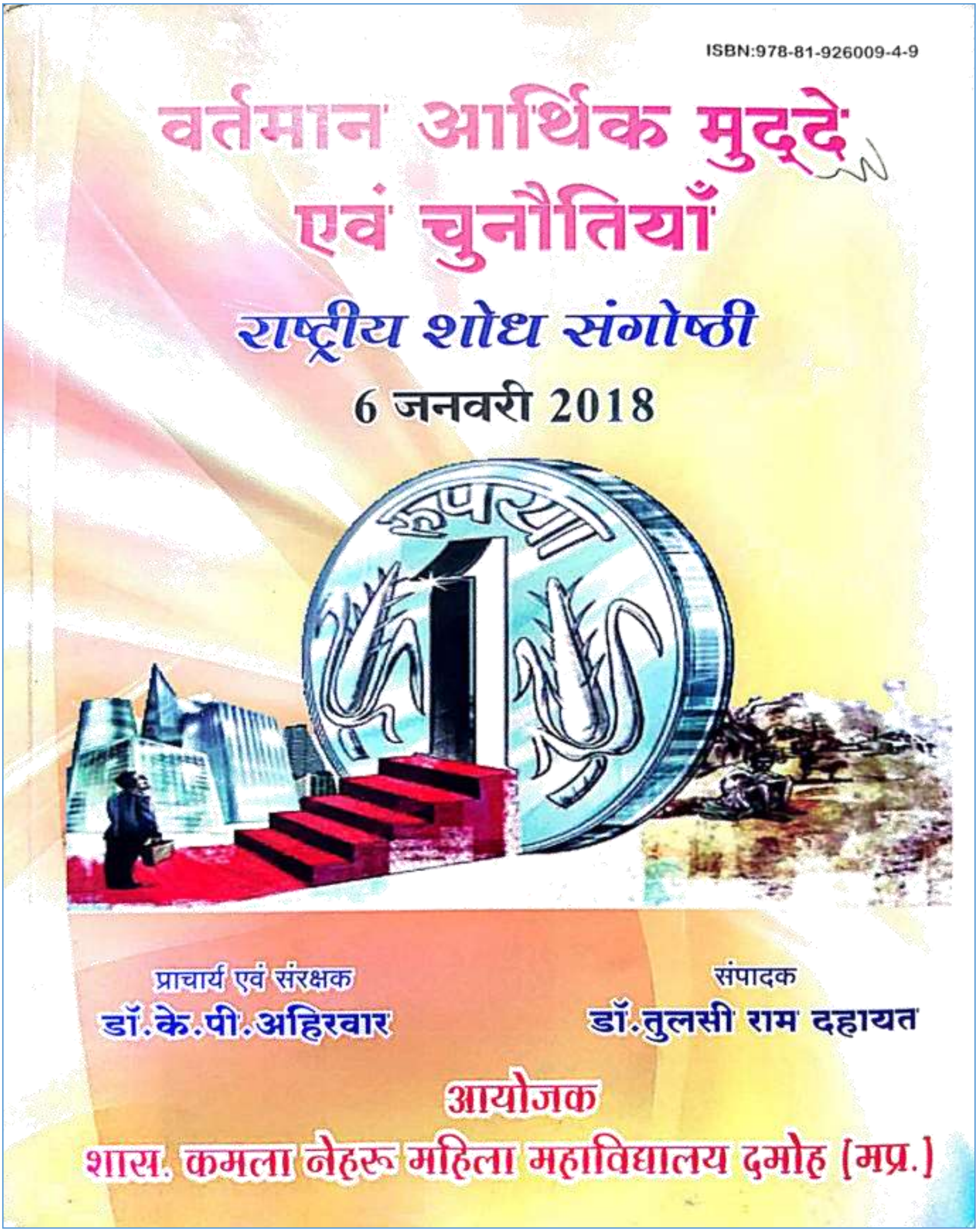

Cont…..

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1	भारतीय आर्थिक विकास में डॉ. अंबेडकर की भूमिका	डॉ.के.पी.अहिरवार	16
2	Indian economics growth in dollors; Strategies, radical remedies of golden crown jewel Medical tourism ?	Dr. S. K. Bhatnagar, Director.	19
3	IMPACT OF COST OF CULTIVATION ON FORMERS INCOME (Special Reference to Damoh District)	Dr.Tulsiram Dahayat Dr.Keshav Tekam	26
4	IMPLEMENTATION OF GOOD AND SERVICE TAX IN INDIA: PROSPECTS AND CHALLENGESDr. Vinod Sen, Dr. Anand Sugandhe	Dr. Vinod Sen, Dr. Anand Sugandhe	31
5	TREND OF URBANIZATION AND CHALLENGES IN BHOPAL	Dr.Kusum Mathur,&Seema Yadav,	38
6	Impact of fiscal sector reforms on Small Scale Industries	*Dr. Pooja Chaturvedi Dr. Atul Loomba Prof. (Dr.) N.C. Jain	43
7	"A Study of Working capital analysis of industry in M.P. with special reference to HEG Ltd Mandideep"	Dr. Preeti Shrivastava, Dr. Prof. N.C. Jain	48
8	Rural Electrification And Agriculture in Damoh District	Dr. Ramesh Athiya	56
9	A Socio Legal Study of Farmer's Interest Transition to Legal Rights	Mr. Shailendra Pachori	61
10	Challenges in Agriculture development for the Indian economy	Dr. BASANTI MATHEW MERLIN	66
11	RURAL TOURISM AND SUSTAINABLE LIVELIHOOD	Poonam Mishra.	71
12	Demonetization and its Impact on Indian Society	Dr. Mamta Awasthy	77
13	IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON THE INDIAN ECONOMY	Ramesh Prasad Aharwal	80
14	Study of Electric Energy Management for a Machine System	P.L. Jain[1] and Santosh Kumar Jain[2]	83
15	मुद्रारहित लेनदेन : भारतीय अर्थव्यवस्था की बड़ी चुनौती	डॉ. हरिनारायण विश्वकर्मा	86
16	जुन्नारदेव में कृषि विकास की चुनौतियाँ	डॉ. कुसुम माथुर,नविता राजुरकर	90
17	पावरलूम उद्योग में श्रम कल्याण की आवश्यकता	श्री राजेश काले	95
18	भारतीय औद्योगीकरण के क्षेत्र में महिला उद्यमी की भूमिका	देवी सिंह ठाकुर	98
19	मध्यप्रदेश में सोयाबीन फसल की उत्पादकता	प्रभाक्षी तिवारी	101
20	मध्यप्रदेश में गन्ने की आधुनिक खेती, आज की आवश्यकता एक अध्ययन	डॉ.विनोद काले	105
21	"भारत में विमुद्रीकरण एक अध्ययन"	डॉ0 गजेन्द्र कुमार रावत,डॉ.अनिल जैन	108
22	गरीबी और आर्थिक विकास	जया अहिरवाल	112
23	विमुद्रीकरण (कम नगद अर्थव्यवस्था की ओर कदम)	डॉ. कीर्ति शुक्ला[1], डॉ.ए.के.पाण्डेय[2],	115
24	"भारत में रोजगार नियोजन की संभावनाऐं"	डॉ. कमर इज़हार	120
25	भारत में गरीबी व जनांकिकीय परिवर्तन	श्रीमती मीना तिवारी	123
26	"ग्रामीण गरीबी और उसके प्रभाव"	डॉ. नीता ठाकुर	127
27	परम्परागत जल स्रोत्र एवं संकट	मनोज कुमार वर्मा एवम् डॉ0 प्रभाकर मिश्रा	132
28	'मध्यप्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का कियान्वयन, मूल्यांकन एवं प्रभाव'	डॉ. पूजा तिवारी	134
29	गरीबी : एक चुनौती	शाहीन परवीन (अतिथि विद्वान)	137
30	**भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज**	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	140
31	**बेरोजगारी एक विचारणीय मुद्दा**	**डॉ. अवधेश कुमार जैन एवं डॉ.डी.के.नेमा**	142
32	वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ वस्तु एवं सेवाकर (जी. एस. टी.)	*विद्यानन्द पाण्डेय डा0 वी0पी0 उनियाल	143

Cont……

भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज

डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव
सहप्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शास0 कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (म0प्र0)

भूमंडलीकरण के अंतर्गत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक राजनैतिक प्रबंधन की आवश्यकता का विश्लेशण करते हुए समीर अमीन (1997), जो कि भूमंडलीकरण एवं तीसरी दुनिया के देशों के प्रति उसके आशय के संबंध में विचार प्रकट करने वाली एक महत्वपूर्ण एवं चर्चित शख्सियत रहे हैं। कहते हैं कि पूंजीवादी व्यवस्थाओं का भूमंडलीकरण कोई नई बात नहीं है, अपितु आधुनिक समय में गुणात्मकता की दृश्टि से इसने एक कदम आगे बढ़ा दिया है साथ ही शब्दों के बीच गहराती निर्भरता ऐसे समय पर प्रकट होती है जबकि संचयन की समस्या अत्यधिक गंभीर रूप लें चुकी है तथा युद्ध के बाद की गर्जना अथवा स्थितियों ने अवरूद्धिकरण की स्थिति पैदा कर दी है।भूमंडलीकरण का प्रभाव केवल व्यापार तक ही सीमित नहीं है वरन यह उत्पादन व्यवस्थाओं, तकनीकी, आर्थिक बाजारों एवं सामाजिक जीवन के अनेक अन्य पहलुओं को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है। नया भूमंडलीकरण राश्ट्र–राज्यों द्वारा अर्थ – प्रबंधन की सामर्थ्य एवं कार्यकुशलता का क्षरण तो करता है। परंतु यह उनके अस्तित्व को नकारने अथवा समाप्त करने की बात नहीं।

आर्थिक भूमंडलीकरण के प्रति राजनैतिक प्रतिकिया स्वरूप संजातीयता की अवधारण का अभ्युदय भूमंडलीकरण का एवं अन्य महत्वपूर्ण आयाम है समीर अमीन कहते हैं 'वर्तमान युग निश्चित रूप से ऐसे सामूहिक सामाजिक तादात्म्य से युक्त जागरण अथवा पुनर्जागरण का परिचायक है जो किसी राश्ट्र राज्य अथवा सामाजिक वर्ग द्वारा परिभाशित जागरण अथवा पुर्नजागरण से बिल्कुल भिन्न है' क्षेत्रवाद, भाशिक एवं सांस्कृतिक दावे, जनजातीय अथवा जाति संबंधी, निश्ठा किसी धार्मिक समुदाय से लगाव आदि इस पुर्नजागरण के विच्छिन्नता रूप है। कभी–कभी ऐसा प्रतीत होता है कि अफीका में राश्ट्रीय एकता की विभिन्नता ने परस्पर स्पर्धा रखने वाली शक्तियों के वैद्य नवीकरण के आधार के रूप में संजातीयता को जन्म दिया है। भारत , अफगानिस्तान, पूर्वी यूरोप, भूतपूर्व सोवियत गणराज्य, भूतपूर्व यूगोस्लाविया, पश्चिम यूरोप और यहां तक कि स्पेन में राश्ट्रीय एकता पर सवालिया चिन्ह लगा है। आधुनिक एवं शक्ति संपन्न देशों एवं भूमंडलीकरण की पक्षधर व्यवस्थाओं द्वारा प्रस्तुत दावों का बारीकी से निरीक्षण करने पर हम पाते है कि राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का बाजार के मात्र एक गुण द्वारा प्रबंधन मात्र एक कल्पना ही है।

भूमंडलीकरण के ध्रुवीकरण का स्वरूप बाजारों के विस्तारीकरण के साथ ही साथ सामाजिक शक्तियों का अभ्युदय बहुलवाद का विरोध एवं अल्पसंख्यक को के भूलतत्ववद उभरकर संपूर्ण सामाजिक संरचना में अपनी अवधारणा की छाप एक राश्ट्र हित के रूप में सकिय होने लगा। जैसे–जैसे समाज को यह अधिकार प्राप्त होने लगा कि भूमंडलीकरण अर्थव्यवस्था सामाजिक, आर्थिक स्वतंत्रता एवं राश्ट्रीय विकास के लक्ष्य को बहुलवादी तीसरी दुनिया के देशों में एक रूपता के स्वरूप विभाजन पर एवं विध्वंसकारी लक्ष्य के साथ प्रकिया को बल प्रदान करने हेतु वैसे ही सामाजिक दृश्टि के महत्वपूर्ण प्रतिभाग में आर्थिक मौलिकता का संबंध एक विकल्प के रूप में स्थानांतरित होता है जिसने विभिन्न सामाजिक समूहों पर अपना दुश्प्रभाव डालना आरंभ किया।

SERIAL NO. -18: Book Chapter: Dr. Aradhana Shrivas Fast Foods Ka balko ke sharir ka mansik vikaas par prabhav ka aadhayan

डॉ. आराधना श्रीवास : एक परिचय

जन्म – 30 दिसम्बर 1985 सागर (म.प्र.)

शिक्षा – B.Sc. (Home Science), M.Sc. (Child Development)
Ph.D (Home Science) जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

लेखन – विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के अलावा विषय से सम्बन्धित
पत्र–पत्रिकाओं में लेख एवं कहानी, कविताएँ आदि प्रकाशित

सेवा – सन 2014 से निरन्तर म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग में अतिथि
विद्वान (गृह विज्ञान)।

सम्प्रति – अतिथि विद्वान (गृह विज्ञान)
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सम्पर्क – दयानन्द वार्ड, पुराना गल्ला मण्डी रोड,
सागर (म.प्र.) पिन कोड–470002
Email-aradhanasagar30@gmail.com

ISBN 978-81-934037-4-7

मूल्य- 150

Cont………

GOPAL PRASAD CHAUDHARI

Digitally signed by GOPAL PRASAD CHAUDHARI
Date: 2023.07.05 13:24:55 +05'30'